“रामचरित मानस में राजतंत्रीय सांस्कृतिक समन्वय”

भारत में संस्कृतियों का जो विराट समन्वय हुआ है रामचरितमानस का उसका अत्यन्त उज्ज्वल प्रतीक है। सबसे पहले तो यह बात है कि उस कथा से भारत की भौगोलिक एकता ध्वनित होती है। एक ही कथा सूत्र में अयोध्या किरकिंधा और लंका तीनों के बंध जाने के कारण सारा देश एक दिखता है। दूसरे इस कथा पर भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में रामायण की रचना हुई, जिनमें से प्रत्येक अपने-अपने क्षेत्र में अत्यन्त लोकप्रिय रही है तथा जिनके प्रचार के कारण भारतीय संस्कृति की एकस्पता में बहुत वृद्धि हुई है। संस्कृति के धार्मिक साहित्य में रामचरितमानस का स्थान अपेक्षाकृत कम व्यापक रहा फिर भी रघुवंश, भद्रकाल, महाभारत, उत्तर रामचरितमानस, प्रतिभावंश, जानी हरण, कन्दमाला, अनंतु-राधाकृष्ण, भारतमानस, अद्भुत रामायण, आनंद रामायण आदि अनेक काव्य इस बात के क्रम में हैं कि भारतवर्ष के अनेक क्षेत्रों के कवियों पर वाल्मीकि रामायण का किताब ग्रामीण प्रभाव पड़ा था। जब देश-भाषाओं का काल आया तब देश-भाषाओं में भी रामचरित पर एक से एक उत्तम काव्य लिखे गए और आदि कवि के काव्य सरोवर का जल पीकर भारत की सभी भाषाओं ने अपने आप को पुष्ट किया।
रामकथा उद्भव एवं विकास

रामकथा ऐतिहासिक हृदरि:

ऋग्वेद के दसम मण्डल के आठवें सूत्र में आपल्य की द्वारा त्वस्त्र के पुत्र (वृत्र) को मारकर बन्दी की गई गीताओं (यहाँ गी अर्थात किरण) को छुड़ाने का वर्णन है। यहाँ त्रित आपल्य की प्रकाश के प्रतीक के रूप में चित्रित है और वृत्र अन्धकार का रुप है त्रित द्वारा वृत्र के नाश में अन्धकार पर प्रकाश की विजय ही चरितार्थ की गई है।

वृत्र सम्बन्धी एक अन्य कथा इस प्रकार इन्द्र से सम्बन्धित है। वृत्र एक भयंकर राक्षस है। वह गीताओं को चुराकर ले जाता है जिससे पृथ्वी पर अन्धकार छा जाता है। इन्द्र की स्तुति एवं प्रार्थना होती है और वह अपने साथियों सहित वृत्र के गढ़ों का उच्चेद कर इन्द्र गीताओं को मुक्त करते हैं और वृत्र इन्द्र के हाथों मारा जाता है। उषा एवं सूर्य का उदय होता है। इसी से इन्द्र को वृत्रहन भी कहा गया है।

इस कथा को ऋग्वेद 5/45/1 में एक ही (श्लोक) ऋचा में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है।

“उत्तर ध्रुव से गंगा” प्रग्न के लेखक के अनुसार इस कथा में आर्यों के ध्रुववास की जन-शृद्धि साधित है जहाँ कई महिनों के अन्धकार के बाद सूर्यदिवस होता है। उन्होंने बलिबन्ध में भी इसी सन्दर्भ को पढ़ा है। विषु सूर्य के प्रतीक है वृत्र युद्ध में उन्होंने इन्द्र का ही साथ दिया था। इन्द्र की सहायता के लिए जो देवता है उनमें बार भी है, यह हृदय है कि राम रावण युद्ध में बाल-जात (हनुमान) राम के सहायक है और राम सूर्यवंशी हैं।

इन्द्र की वृत्रहना को आदिकोि ने “राम-रावण” युद्ध के रूप
में कल्पित कर लिया हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। तुलसी दास जी भी “राम-रावण” युद्ध को “धर्म-अधर्म” के सनातन संघर्ष के रूप में ही प्रस्तुत करते हैं।

यहाँ अन्धकार एवं प्रकाश का युद्ध धर्म-अधर्म के संघर्ष का रूप ही है, इस प्रकार रावणारि राम के रूप में बृत्र हंता इन्द्र की प्रतिष्ठा स्वतः हो जाती है और राम का को दण्ड इन्द्र के ब्रह्म का स्थान ले लेता है। तुलसी के लिए राम-रावण युद्ध ही कथा का केंद्रिय रूप है, क्योंकि रावण के अत्यधिक एवं पृथ्वी की प्रार्थना से ही कथा का आरम्भ होता है एवं रामराज्य की स्थापना पर ही कथा समाप्त होती है।

इन्द्र वैदिक शौर्य के प्रतीत है, परन्तु उनका शौर्य धर्म का वाहन है, स्वतंत्र रूप से उसकी कोई सत्ता नहीं है।

विष्णु को उपेन्द्र भी कहा गया है एवं राम बिष्णु के अवतार होने के कारण उपेन्द्रता से भूषित है, परन्तु तुलसी उन्हें विष्णु से कहीं ऊपर ब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। उनके राम में वर्ण अतिथित, इन्द्र का तेज और बुल्क दक्ष एक साथ दर्शित किया होती है यह सत्य है कि तुलसी ने राम की इस धर्म संस्थापना की प्रारंभिक रूप से ही प्राप्त किया है। भगवत गीता का अविकल्प अनुवाद ब्रह्म द्वारा पृथ्वी को दिये गये आवासन में मिलता है परन्तु उसका निर्वाह जिस विराट पृथ्वी में जिस विद्वंत और सृष्टि से हुआ है वह इन्द्र बृत्र सम्बन्धी वैदिक परम्परा की जातीय या राज्य चेतना का ही प्रसार है।

कृष्ण वंशित में राम शब्द का उल्लेख आया है। पं. चिन्तामणि विनायक वेद ने अनुसार यह राम शब्द श्री रामचन्द्र का ही सृष्टि है। इससे यह सिद्ध होता है कि कृष्ण की इससे मण्डल की रचना से पुर्व भी श्रीराम का अस्तित्व एवं राम का का अस्तित्व था यजुर्वेद एवं अथर्वेद में भी राम के अस्तित्व का उल्लेख मिलता है।
(2) उन दोनों का विकास एक दूसरे का पूरक कहा जाय तो अनिश्चित कि नहीं होगी रामकथा भारतवर्ष की सांस्कृतिक विचार धारा के विकास का ही दूसरा स्वरूप है (3) अधर्म के उपर धर्म की जय के साथ-साथ नारायण की दिव्यता का जो स्वरूप दिखाई दिया है उसे ही हम रामकथा मान सकते हैं (1) गोस्वामी तुलसी दास ने स्वयं लिखा है।

नाना-पुराण निम्नामागम सम्मन यदू
रामायणे निग्रदिनं क्वचिदन्योऽपि।
स्वातः सुखयुतं तुलसी रघुनाथ गाधा (2)
भाषा निवन्ध मति मंजुल मातनिै।। (3)

राम चरित मानस का अध्ययन करने पर हमें यह ज्ञात होता है कि उन्होंने पुराणों से कथानक ग्रहण किया, बेदों उपनिषदों से ज्ञान चर्चा ली एवं शाखाओं से ज्ञान एवं भक्ति को ग्रहण किया एवं सबका सार ग्रहण करके अपनी बुद्धि एवं कौशल के द्वारा उसे परिमार्जित कर जन सामान्य की भाषा में प्रस्तुत किया है (4)

यदि हम क्रमानुसार देखें तो -

1. पुराण - भागवत-पुराण, पद्म-पुराण संस्कृत पुराण, शिवपुराण, ब्रह्मचारी-पुराण ब्रह्मचारिणी पुराण, मार्कण्डेयपुराण तथा नरसिंह पुराण, हरिवंश पुराण, अंगिरपुराण, नारदपुराण, बायुपुराण, कृष्णपुराण, मत्य पुराण

2. निम्न - (वैदिकांवमथयं) ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्वेद तैतिरिय उपनिषद्, श्वेताश्वर उपनिषद तथा शाकटायण, उपनिषद् (4)

3. आगम - शैव (शाक्त), वैष्णव शाखा तथा दर्शन नारद पंचरत्न अहिंसन्य संहिता (4)

4. रामायण - वाल्मीकि रामायण (4) क्वचिदन्योऽपि -
1. महाभारत-वाल्मीकि के साथ-साथ तुलसी दास जी ने आदि कवि व्यास जी को भी प्रणाम कर आदर दिया है।

2. महाकाव्य - महाभारत, रघुवंश, जानकी हरण, महिकाव्य,

3. नाटक - प्रसन्न राधव, हनुमानादातक

4. नीतिग्रन्ध - पंचतंत्र हिलोपदेश चाणक्यनीति, भर्तीरिश्यतक

5. गीता - श्रीमदभगवतगीता, गुरु-गीता, पाण्डव-गीता।

राम कथा के विकास का प्रथम (चरण) सोपान वाल्मीकि कृत रामायण है (2)(3) इस्वी पूर्व चौथी शताब्दी तक राम कथा सम्बन्धी आद्यन्यानों की रचना होने लगी थी। वैदिक काल के बाद इधाकुं वंश के सूतों द्वारा इन आद्यन्यानों की रचना की जाने लगी थी।

उसी समय स्फुट आद्यन्यान काव्य के आधार पर श्री वाल्मीकि ने राम कथा पर आधारित एक विश्वसूत काव्य “रामायण” की रचना की। इसमें राम कथा की रचना एक सर्वाधिक काव्य के रूप में की गई।(2) रामायण की कथा के राम के रचना में एक आदर्श कृत्रिम और बीर प्रतापी राजा के रूप में हमारे सामने आते हैं 3 वे ऐसे राजा थे जो सभी तरह से परिपूर्ण थे।

रामायण में मथिलदा पुरुषोत्तम राम का वर्णन है उसमें विष्णु के अवतार माने गए हैं।(4)

इसमें सात काण्डों के अन्तर्गत उनका संपूर्ण जीवन चरित्र है। वाल्मीकि रचित रामायण भारतीय संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ एवं सम्प्रभुत गृहस्थ आद्यन्यान का महान काव्य माना जाता है।(1)(2)

इसमें राम को आदर्श पुत्र भाई शिष्य पतिए एवं एक आदर्श स्वाभी का विवेदन करते हुए अपनी लेखनी की कुशलता को प्रदर्शित किया है। लौकिक संस्कृति में सर्वप्रथम काव्य रचना करने के कारण
ही महर्षि वाल्मीकि आदि कवि के नाम से प्रख्यात हुए। (2) जन
श्रुतियों पर चूकर आधारित ही रहा जा सकता है अतः प्रामाणिकता
के आधार पर हम उसे प्रथम रामायण कह सकते हैं। यद्यपि यह
sत्त्व है कि राम कथा पुरातन काल से चली आ रही है।

आदि कवि को प्रेरित करने वाली प्रेरणा भी अद्भुत थी।

एक दिन वे स्नान करने के लिए तमसा नामक नदी पर जा
रहे थे उस समय तट पर कोच पक्षी का एक जोड़ा क्रिड़ा-रज था
उसी समय एक शिकारी वहां आ पहुँचा एवं उसने उन पर तीर चला
dिया जिससे कोच मारा गया एवं कोची क्रुण कदन करने लगी
। कवि वाल्मीकि इस ममत्तिक क्रुण हस्य से द्रवित हो उठे एवं
उनके मुख से अनायास ही कुछ शब्द श्लोक के स्वरूप में प्रस्कृति
hुए जिनमें उस व्याख्र को श्राप दिया गया था।

मा विषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।
यतु, कौर्य मिथुनादेकमवधीः काममोहित्य।।

इसी समय ब्रह्माजी ने प्रकट होकर उन्हें “दिव्य रामकथा” लिखने
का आदेश दिया जो कथा अपने आप में भी क्रुण रस की उत्पति
kरने वाली थी। राम-कथा को सुप्रस्कृति स्वरूप देने का श्रेय वाल्मीकि
cो ही प्राप्त होता है। (1) वाल्मीकि रामायण आज भी आदरणीय
cे एवं रोहि। वाल्मीकि राम के समकालीन थे (2) कुछ विद्वानों
cा कथन है कुछ इहें परस्पर मानते हैं कुछ पारशुराम विद्वानों का
cा मत है कि रामायण की कथा का आविष्कार अयोध्या के इस्तमाल
द्वारा शासित कौशल देश में हुआ। (3) वाल्मीकि ने पूर्व इस कथा
cे अनेक रूप सूत्रों द्वारा प्रचलित थे अशवधोष ने अपने बुद्ध चरित
cे इस बात की पुष्टि करते हुए लिखा है कि वाल्मीकि जानसच सस्तरी पर्यायमध्यम व्यवहारों महर्षि

वाल्मीकि मुनि अवश्य ही श्रीराम के समकालीन रहे होगे, क्योंकि
निर्वाचित सीता के आश्रयदाता के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं सीता उन्हों के आश्रय में आश्रय ग्रहण करती है साथ ही लब एवं कुश को भी वही जन्म देती है

तां सीतां शोकभारार्त्वाल्मीकिकिमुनि पुंगवः
उचाच मधुरं वाणी हदयभिव तेजसा-
स्वुषा दशरथस्य एवं रामस्य महिषी प्रिया
जनकस्य सुता राजः स्वागते ते पतिरते -(1)

भागवन रामपत्नी आ प्रसूता दार्कद्रथमः
ततो रक्षा महारजः कुरु भूतविनाशिनीयम -(2)

इन सभी प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि राम के राज्य के समय में ही वाल्मीकि ने उस समय की प्रचलित रामकथा जो कि तब तक किसी ने भी अपनी लेखनी द्वारा अपने काव्य का माध्यम नहीं बनाया था । को ग्रहण करके अपनी सुसंस्कृत भाषा में आदर्श स्वरूप प्रदान कर जन भाषा के समक्ष प्रस्तुत किया था ।

लौकिक संस्कृत में सर्वप्रथम काव्य रचना का सृजन करने के कारण ही रामायण को आदिकाव्य व वाल्मीकि को आदि कवि कहा जाता है (1) रामायण काव्य परम्परा -

इसके बाद अनेक रामायणों की रचना की गई जिनमें -(2)

1. महर्षि नारद - कृत संस्कृत रामायण
2. महर्षि अगस्त - कृत अगस्त रामायण
3. लोमेश - कृत लोमेश रामायण
4. महर्षि अश्वि - कृत सौपद्य रामायण
5. महर्षि सुतीक्षण - कृत सन्तुल रामायण
6. महर्षि शरभंग - कृत शौधर्द रामायण
7. महर्षि - कृत शोर्वर रामायण
8. - कृत चान्द रामायण
9. - कृत सुब्रह्मण्य रामायण
10. - कृत मन्द रामायण (2)
11. - कृत रामायण मणिरत्न
12. सुब्रह्मण्य रामायण
13. श्रावण रामायण
14. दुर्गा रामायण
15. रामायण महामाला
16. देव रामायण
17. अध्यात्म रामायण
18. अद्सुत रामायण

रामायण के रचना काल पर बहुत मतभेद रहा है। भारतीय परम्परा के अनुसार रामायण के रचना आदिकाल में हो गया है जो इसकी प्राचीनता से आदिकाल में हो चुका है। अद्वितीय रूप से रामायण के रचना काल में 1600 ई. पू. में माना जाता है। पं. विभिन्न अनुसंधान या प्राचीन शोध से यह स्पष्ट होता है कि वाल्मीकि रामायण से भी पहले रामकथा प्रसिद्ध थी एवं वाल्मीकि ने उसी को आधार बनाकर यह रामायण लिखी थी। परन्तु उस रामायण में भी रामायण की प्रकृति अंश जुड़ते रहने के कारण उसके कलेवर में आवश्यकतानुसार वृद्धि होती गई।

विद्वानों का कथन है कि रामायण में कहां पर भी वैद्यक धर्म का संकेत मात्र भी नहीं है अतः यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि यह 1500 ई. पू. पृथ्वी शताब्दी में हुआ। उसके आसपास के विद्वान पाणिनि, कौटिल्य, भाषा परंजति आदि इससे परिचित थे। रामायण की भाषा भी इसे पाणिनि का पूर्ववर्ती ही सिद्ध करती है। पाणिनि ने उसमें प्रसिद्ध अनेक शब्दों, अनेक शब्दों की न्युनता की प्रवर्तित की है। रामायण की भाषा शैली महाभारत की भाषा शैली की अपेक्षा अधिक परिष्कृत सुसंगठित एवं अलंकृत है जबकि रामायण महाभारत से अधिक प्राचीन ग्रन्थ है यह सवालित है यह आदिकाल योग्य होते हुए भी अभूतपूर्व
व्यवस्थित परिमार्जित एवं परिपूर्ण ग्रन्थ है इसमें वाल्मीकि की चिन्तन शक्ति का स्पष्ट स्वरूप दिखाई देता है उनका कवि हंदय अपनी सम्पूर्ण काव्य सृजन शक्ति के साथ कार्य करता है। आदिकवि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति बड़े ही सुन्दर एवं सरल दंग से की है।

प्रसिद्धि विश्वास बलदेव उपाध्याय के अनुसार -

भारतीय गृहस्थ जीवन का बिस्तृत चित्रण रामायण कर मुख्य उद्देश्य प्रतीत होती है। आदर्श पिता माता आदर्श भारता आदर्श पति आदर्श पत्नी आदि जिसने आदर्शों को इस अनुपम महाकाव्य में आदिकवि की शब्दृत्तिका ने खोचा है वे सब चित्र गृहस्थर्म के पत्र पर ही चित्रित किए गये हैं। इतना ही क्यों राम-रावण का वह भयानक सूढ़ भी इस काव्य की रचना का उद्देश्य नहीं कहा जा सकता है।(1)

कवि का हंदय जो केवल परंपरा हरेक के (हर रिश्ते के) एक दूसरे के प्रति विश्वास प्रेम व उपकी निष्कृप्त अभिव्यक्ति को ही पाठको तक पहुँचाना चाहता है।

रामायण को हम सभी ने अपनी धरोहर के रूप में स्वीकार किया है जिसमें प्राचीन भारतीय संस्कृति अपनी गरिमा को छुपाए हुए है। आज भी किसी व्यक्ति को अपने बच्चों को अच्छे संस्कारों का सिंचन करना होता है जो वे उस्ते रामायण का ही पठन करने का आयाह करते हैं चूँकि रामायण को भारतीय सभ्यता ने अपनी अभिव्यक्ति के लिए प्रमुख साधन बना रखा है और भारतीय सभ्यता की प्रतिलग पृथ्वीयश्रम में है अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि आदिकवि ने अपने इस महान ग्रन्थ में चारित्रिक हड़ताल आध्यात्मिक शक्ति संस्कारागत सरलता, मर्यादित आचरण वैचारिक विनिमय एवं व्यवहारिक सहजता आदि का ही ज्यादा है किया।

लौकिक संस्कृत में सर्वप्रथम काव्य रचना करने के कारण ही
वेकबि केस्थान पर आदिकबि कहे गये परन्तु उनके साहित्य युजन में कहीं पर भी हमें यह प्रतीत नहीं हुआ है कि यह प्रथम प्रथम है। रामायण सर्वप्रथम सम्पत्त एवं काव्य प्रवीण कबि के काव्य का स्वरूप ही जान पड़ता है। इस गुण अलंकार तथा ध्वनि सभी का भेद प्रभेदों के उदाहरण हमें इसमें प्रतुर मात्राम में मिल जाते हैं।

रामायण की रचना महाभारत से पहले हुई है इसमें भी काफी विवाद है परन्तु विद्वानों की प्राचीन परस्परा राम एवं वाल्मीकि की समकालीन मानने के पक्ष में है। रामायण में उल्लेखित देशों दीपों भौगोलिक परिस्थितियों तथा घटनाओं के अनुसार इसका रचनाकाल दृश्य शताब्दी ई.पू. से पूर्वसर्वत्र सिद्ध होता है। यह स्पष्ट है कि वैद्य धर्म का कभी भी इसमें उल्लेख नहीं है इससे इसकी मूलतत्त्व ई.पू. 800 से 600 तक हो चुकी थी तथा दीपकों सहित इसका अन्तिम संस्करण ई.पू. 500 दृश्य शताब्दी तक माना जाता है।

रामायण में आदि काव्योचित काव्य सीन्द्रब्रह्म प्रभूत मात्रा में उपलब्ध है। काव्य शाखा के अनुसार एक समूह रचना है इसको हम इस प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं -

1. सर्वप्रथम रामाभिशेक के लिए उत्सुकजन समुदय की भीड़भाड़ का यह चिठ्ण कितना सटीक है -

करेणु मातंगराशः संकुलं
महाजनीः परिपुर्वचत्वरः।
प्रभुतरने बहु पुण्य संघय
dदर्शं रामों विमलं महापथमं।।(1)

या फिर -

राम के प्रति सीता का अनुरक्तीभूत अनव भाव भन में सहगमन की अनिवार्यता को स्पष्ट करते हुए यह कहना -
अनन्यभावामुनर्क चेतसं
त्वचा किस्मा मरणायनिनिकिताम्
नयस्व मा साधु कुश्च्व याचानां (2)
नानो मया ने गुरुता भविष्यति ॥(1)

उसी प्रकार सीता जी के प्रति राम का अनन्य अनुराग था वह उनके हरण के पश्चात् असह मनोवेदना एवं पीड़ा के रूप में स्पष्ट दिखाई देता है -

मया विहीना विजने बने सा
रक्षोभिरहितं विकृष्ट्यमानां ।
नूंं न्यानं कुर्सीव दीना
र्जा मुक्तवत्त्यावतकान्तनेत्रात्रा ॥11॥(2)

इस प्रकार वाल्मीकि की रचना हर तरह से काव्य के सभी श्रेणि गुणों से युक्त है ।

रामायण के पश्चात् संस्कृत साहित्य में सरस्वती के बरद पुत्र कबिकुल चूड़ामणि तथा भारतीय संस्कृति के महान व्याख्याता महाकवि कालीदास का नाम लिया जाता है ।(3) महाकवि कालीदास के महान काव्य रघुवंश की बड़ी प्रसिद्धि है ।(4) पश्चात् विद्वान कीथ ने इसे इनकी प्रौढ़ प्रतिभा को अभिव्यक्त करने वाला ग्रन्थ माना गया है ॥(1)

रघुवंश उन्नीस संवर्ष में रचित सूर्यवंशी राजाओं के बंश का वर्णन है वास्तविकता का समावेश करने के लिए ही इसमें विवेचनीय 27 राजाओं में से केवल 20 राजाओं का संक्षिप्त उल्लेख मात्र करते छोड़ दिया है ।

यहां पर इसका व वाल्मीकि रामायण का तुलनात्मक अध्ययन यहाँ जाए तो यह ज्ञान होगा कि दोनों महाकवियों ने एक ही रामकथा के पश्चात् को भिन्न-भिन्न प्रकार से अपने काव्य का माध्यम
यहां पर यह स्पष्ट होता है कि कवि कालीदास के द्वारा रचित रघुवंश की कथा पर वाल्मीकि रामायण की अपेक्षा पद्मपुराण का अधिक प्रभाव दिखाई देता है। दोनों महाकाव्यों में वर्णित वंशावली के अमोच में भी अन्तर है एवं उसमें वर्णित राजाओं के नामों में भी काफी अन्तर है। वैसे हमारा ध्येय केवल राम कथा की ऐतिहासिकता को स्पष्ट करना है अतः हम राम कथा से ही अपने मत की पुष्टि करते हैं।

रघुवंश के प्रथम राजा दिलीप है जो कि रामचन्द्र जी के पूर्वज माने जाते हैं जो इस प्रकार स्पष्ट है।

दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम-लक्षण, भरत, शशुद्धा, नव-कुश

वंशसंबंधागत भिन्नता के अलावा मूलकथा में भी कहीं-कहीं अन्तर पाया जाता है जैसे वाल्मीकि रामायण में राम की सेवा के साथ लक्ष्मण के युद्ध का वर्णन मिलता है जबरा रघुवंश में इसका कोई उल्लेख नहीं है।

रघुवंश के प्रथम राजा है दिलीप जो निसंतान थे। ऋषि वशिष्ठ उनके दुर्भाग्य का कारण बताते हैं इन्द्रलोक से लौटते समय अपनी प्रिय रानी के सम्बन्ध में ही विचारलीन रहने के कारण उत्सुकतावश कामधेनु का उचित समान करना भूल गए जिससे उन्हें उस समय तक निसंतान रहने का श्राप दे दिया जब तक वे उनकी पुत्री नन्दिनी को अपनी सेवा से प्रसन्न न करते।

अन्त में उनके यहां रघु का जन्म होता है वे विश्वविजेता होते हैं। रघु अपने पिता का अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा इन्द्र के द्वारा चुरा लेने पर वह इन्द्र से भी युद्ध करता है अन्त में इन्द्र उसकी वीरता पर अति प्रसन्न होते हैं।
रघु के पिता अज स्वयंबर में विद्यराज-पुत्री इनदुमति को प्राप्त करते हैं जो कि वास्तव में एक स्वर्ग की अपस्रा थी जो कर्त्तव्योंछजन के अपराध में उस समय तक पृथ्वी पर निवास करने के लिए विवश थी। जब तक वह उस दिव्य हार को स्पर्श नहीं कर लेती है। अनेक वर्षों तक वह अज के साथ सुखपूर्वक रहती है। एवं फिर दशरथ नामक पुत्र को जन्म देने पर -(अनावंक एक दिन महर्षि नारद की वीणा से छूटकर एक दिव्य हार उसके वक्षस्थल पर आ गिरता है और वह आपोन्युक हो जाती है। अज अपनी पत्नी के लिए विलाप करते हैं) यह रघुवंश को अधिक प्रभावशाली बनाता है जो उसकी विशेषताओं में से एक है।

इन्हीं अज के पुत्र दशरथ के पुत्र राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न थे। रघुवंश के नवम्र सर्ग में दशरथ का राज्याभिषेक होना, मृगया वर्णन, धोखे से श्रवण कुमार की मृत्यु व पुत्र शोक से सन्ताप पिता द्वारा राजा को दिए गये श्राप का वर्णन है।

अगले सर्ग में राजा का पुनरुक्ति-यज्ञ विधान व चार-पुत्रों के जन्म का उल्लेख है।

प्यारहें बार्हें व तेरहें सर्ग में हमारी मूल राम कथा की संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है तेरहवा सर्ग प्रकृति के चित्रण के लिए प्रसिद्ध है। इसमें इन्द्र के पुष्पक विमान से अयाथ लौटते समय श्री राम सीता को उन सीनों को दिखलाते हैं जहां पर उन्होने अपने सुख एवं दुःख के दिन व्यतीत किए थे।

यहां पर कालिदास का प्रकृति प्रेम मुख्र हो उठा है। चौदहवें एवं पन्द्रहवें सर्ग में राम को राज्यभिषेक रामराज्य उसके पश्चात सीता का त्याग, सीता द्वारा लब्ध एवं कुश को जन्म देना, राम के द्वारा पकड़ा जाना राम एवं सीता का मिलन एवं सीता का धरती की गोद में समा जाना आदि निहित है। 116 वें सर्ग में राम के दिव्य लोक प्रस्थान करने के पश्चात अयाथ्या नगरी का नारी के
रूप में कुशावती के राजा कुश के पास जाकर अपनी दयनीय दशा का वर्णन करने का प्रभावशाली उद्देश्य है। अन्तिम तीन सर्गों में 23 राजाओं को वर्णन है जो उस रघुवंश में उद्धृतित पात्र मात्र है।

कवि कालिदास जीवन में कर्त्तव्य पालन को जीवन को सर्वश्रेष्ठ आदर्श के रूप में प्रतिस्थापित किया है एवं कर्त्तव्य ही उसके जीवन का सम्पूर्ण नियमन करता है।

कालीदास के अनुसार युवावस्था का प्रमुख उद्देश्य केवल धनार्जन व संचय होना चाहिए, उसके पश्चात् ही प्रेम का सीन होना चाहिए।

अन्त यानि वृद्धावस्था में मोक्ष की प्राप्ति ही जीवन का अन्तिम लक्ष होना चाहिए। इसी अपने दृष्टिकोण को वे रघुवंश में प्रस्तुत करते हैं।

शाशीवेंद्रभूष्ण-विद्यानां यीवने विषवेंद्रविनाम।
वृद्धकः मुन्तवृत्तिनां योगेनान्ते तमुव्यव्यज्ञम॥(1)

अधिवर्ण नामक अन्तिम राजा के (टी बी) राजवंश से दिवंगत हो जाने पर उसकी गर्भिणी महारानी द्वारा राज्य संचालन की बात कह कर कालीदास अपनी कथा को समाप्त कर देते हैं।

एवं यही पर रघुवंश की समाप्ति हो जाती है।

कैथ के कथानुसार रघुवंश में कवि कालीदास के द्वारा जो शूरवंश का यथागाम किया गया है वह उस समय के गुप्तवंश की कीर्ति का ही चित्रण कहा जा सकता है॥(1)

जो व्यक्ति जितना अधिक विद्या एवं तेजस्वी तथा सर्वज़ होता है उसमें-उत्तम दी अधिक विनिमय एवं उदारता भी होती है उसका जीता जागता उदाहरण हमें कवि कालीदास के ग्रंथ रघुवंश से प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि भारतीय संस्कृति के महान व्याख्याता कवि के
रूप में सरस्वती पुत्र कविकुल-चूड़ामणि को संस्कृत साहित्य स्थल आकाश में निर्माता प्रकाशित होने वाला सूर्य कहा जा सकता है ।

विद्वान कालिदास को हराजा विक्रमादित्य के नौ रत्नों में से एक बतलाते हैं ।(1)

धनवन्तरि क्षणिकामय सिंह-शंकु-वेताल भरु घटरकरि कालिदासा:
ख्याति चराहमिहिरी, पुपते: सभायां रत्नाति वैवरु चिरन्व विक्रमस्य:

(2)

यदि एक महान कवि अपने काव्य में राम कथा को आधार बनाकर के महाकाव्य का सुजन करते हैं तो इसका मतलब यह होता है कि राम कथा निःसंदेह ही बहत ही अधिक प्रचलित एवं प्रभावशाली और ऐतिहासिक भूतकालीन सुगुण्ड कथा थी ।

कालिदास के परचात कवि भट्ट ने अपने काव्य में राम-कथा को आधार बनाकर “रावण-वध” महाकाव्य की रचना महाराज श्रीधर सेन के राज्य काल में सौराष्ट्र की तलनी नामकी नगरी में की थी जो कि श्रीधर सेन द्वितीय के समय कालिन थे क्योंकि उनके समय में ही 610 ई. के शिलालेख में देने का वर्णन मिलता है ।

कवि भट्ट जिन्हें व्याकरण शास्त्र का बहत अधिक ज्ञान था ।

एवं उनका मूल उदेश्य भी जन सामान्य एवं विद्वानों को व्याकरण का पूर्ण ज्ञान प्रदान करना एवं विभिन्न अलंकार व पहुँचाना था ।

वे व्याकरण में पाणिनी के अनुयायी थे । उन्हें “व्याकरण शास्त्रोपदेशी कवि” (4) कहा जाता था ।

“रावण-वधम्” को भट्ट काव्य के नाम से भी जाना जाता है । इसमें कुल 22 सर्ग एवं 1624 श्लोक हैं । इसमें कवि भट्ट ने महर्षि विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण के असुरो के संहार के लिए वनगमन की घटना से आरम्भ किया है । यह कथा 4
काण्डों में विभाजित की गई है -

1. प्रकीर्ण काण्ड
2. अधिकार काण्ड
3. प्रसन्न काण्ड
4. तिद्वतं काण्ड

(1) प्रथम काण्ड: - प्रकीर्ण काण्ड में 5 सर्ग हैं जिनमें राम के जन्म से लेकर सीता हरण तक की कथा को काल्पनिक रूप में प्रस्तुत किया है। कवि ने प्रथम चार सर्गों में अपने कवि स्वरूप को अंधिक मुखर रूप में प्रस्तुत होने दिया है उनमें उनका व्याकरण शास्त्री स्वरूप गौरव हो गया है ऐसा पाठक को महसूस होता है।

पंचम सर्ग में भद्र को अपना व्याकरण स्वरूप प्रस्तुत करते हैं जहां पर उनके द्वारा ‘2’ प्रत्यय एवं आधिकार के प्रयोगों का संकेत मिलता है। इस काण्ड का विचार कवि ने काफी संजीवता के साथ किया है।

(2) द्वितीय काण्ड को अधिकार काण्ड कहा जाता है इसमें 4 सर्ग हैं जिनमें सुग्रीव सीता की खोज, अशोक वाटिका विध्वंस तथा पवनपुत्र हनुमान जी की वीरता व पराक्रम की यशोगाथा है इसमें कुछ पद्म प्रकीर्ण भी समिलत हैं।

व्याकरण शास्त्र की दृष्टि से इनमें दुह, याच, पचि, आदि हिंकर्मक धातुओं के प्रयोगों तथा तत्क्षिलह प्रयोग भाव तथा कतरी प्रयोग आत्मने पदाधिकार एवं अनभिस्व ने सुवाच अधिकार के प्रयोगों को प्रस्तुत किया है।

(3) तीस्रे अर्थात प्रसन्न काण्ड में भी 4 ही सर्ग हैं। जिनमें सीता विज्ञान दर्शन प्रात: कालीन सीन्द्र का वर्णन विभीषण का आगमन राम के द्वारा समुद्र पर पुल बांधने आदि का वर्णन है।
इसमें भट्टि ने अपने सभी अर्थत चारों सगों में अपने अलंकारिक एवं शाक्तियाँ ज्ञान से पाठकों को चमकाने का कार्य किया है। भट्टि ने शाब्दिक एवं अर्थलंकार के साथ-साथ माधुर्य का भी अनोखा मिश्रण किया है।

अतिम सगों में श्लेष का भाषासम नामक भेद का प्रयोग दिखाई देता है।

(4) अतिम काण्ड तिड्डल काण्ड - इसमें 8 सगों में प्रशस्त, कुम्भकर्ण संहार, राणा विलाप राणा वध विभीषण विलाप, विभीषण का राज्याभिषेक की कथा का वर्णन है।

इसमें कवि भट्टि ने व्याकरण अर्द्धांशों की दृष्टि से आकर्षक नी सगों में नी लकारों (लिट, लूड, लूट, लड, लिड, लोट, लूड तथा लूड) का वर्णन किया है।

कुछ विद्वान जो कि समीक्षक भी है इसको शास्त्र काव्य भी कहते है, साथ ही कहा जाता है कि व्याकरण शास्त्र के ज्ञान भी कहते है, साथ ही कहा जाता है कि व्याकरण शास्त्र के ज्ञान से अभिलेख व्यक्तियों के लिए यह काव्य शास्त्र उसी प्रकार अनुप्रयोगी है जैसे अन्ये व्यक्ति के हाथ में दीपक अथवा मशाल दे दी जाए, तो भी वह उसका महत्व नहीं ज्यादा रहता है।

(2) कवि भट्टि ने अपनी इस बात की पुष्टि भी स्वयं ही की है।

दीपतुलय प्रबन्धोद्वर शब्द लक्षणचक्षुणाम।
हरतादर्शे इवाधाना भवेदू व्याकरणाद्वर्। (3)
अलंकार चित्रण का उदाहरण -
न ताज्जुलं यन्त्र सुचारसंपक्वं
पंक्तं न धय्य लीन षडपुदुम
न षडपीडुसी न सुमुख्य योः कलं न गुजितं
तत्र जहार यमन्।
भष्ट्र का ज्ञान सागर के समान विशाल था पाठक जितना भी
उनके काव्य का अध्ययन करता है वह उतनी अधिक गहराई से दृष्टा
ही चला जाता है।

उनके व्याकरण को प्रदर्शित करने बाले निम्न उदाहरण यहां आवश्यक
एवं उपयुक्त प्रतीत होते हैं -

सोद्धृष्टि वेदांखिदशानवयः पितृनसाप्तीति सममंसंत बन्धुनू।
व्यजेष्ट शब्दव्यमरंस्तर्नीति समूलधातां न्यायविदीर्शण।

इस पद में, (1) अत्यधिक अयश्च अताप्तीति सममंसंत व्यजेष्ट अरस्तन्यवधीत
आदि क्रियाएँ सामान्य भूत तुष्ट लक्षार की है। परस्मैपदी व आत्मनेपदी
दोनों प्रकार की धातु के रूप में प्रस्तुत है। -

बलि, बलि जलधिममण्ये
जस्यामृतं, देवकुलं विजिजये।
कल्याणानदुरञ्चा: वसुधा तथोह,
वेनात्व भारोदितिगुरु तस्ये।

कवि भष्ट्र के पश्चात राम कथा को अपने महाकाव्य में सीन
देने बाले कवि कुमार दास माने जाते हैं जो कि संस्कृत साहित्य
के देवीप्रभान सितारे के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

ये मूलरूप से लंका के निवासी थे जिसे सिङ्गलदीय भी कहा
जाता है।

इनके बारे में यह कहा जाता है कि ये कालिदास के अनन्त
भाव के अत्यद्वारा कालिदास के समय का ही प्रभाव इनके काव्य पर
सप्त दिखाई देता है। ये लंका के राजा भी थे एवं 517 ई से
526 तक कुमारदास ने वहां शासन किया था।

रघुवंश के बाद कुमारदास ही “जानकी-हरण” की रचना करने
में समर्थ थे ऐसा कहा जाता है।(1)

जानकी हरणमू -

इस महाकाव्य में रामायण की पूरी कथा प्राप्त होती है फिर भी कुमार दास ने अपने काव्य का नाम ‘जानकी-हरणमू’ क्यों रखा उसके सन्दर्भ में यह कहा जाता है कि उन्होंने अपने काव्य में सीता हरण की कथा को केन्द्र में रख कर अपने काव्य का सुजनन किया है अतः इसे जानकी हरणमू के नाम से पुकारा गया है, साथ ही साथ राजशेखर-रघुवंश के उपस्थित रहते हुए जानकी हरण करने या रचने का सामार्थ्य या तो कुमारदास में था या रावण में था। यह कार्य कुछ समय तक अधूरा रहा और इसको कालीपद बाबू ने पूरा किया।

इन सर्गों में इस प्रकार रा कथा निहित है -

1. प्रथम सर्ग - राजा दशरथ का आरम्भ से वर्णन अयोध्या नगरी एवं राजा दशरथ की तीनों रानियों का वर्णन।

2. द्वितीय वर्ग - देवताओं द्वारा भगवान बिश्वु के पास रावण से पराजित होने के बुत्तात का वर्णन एवं उनकी अवतार लेने वाली प्रतिज्ञा का उल्लेख आदि है।

3. तृतीय सर्ग - ओढ़ु वर्णन प्रारंभ सच्चा, दशरथ की क्रिडाओं का वर्णन।

4. चतुर्थ सर्ग - श्री राम का कौशल्या के गर्भ में प्रवेश एवं श्री राम जन्म की कथा।

5. पंचम सर्ग - इसमें महर्षि विश्वामित्र के साथ श्रीराम व लक्ष्मण का अशी राक्षसों के ग्रास से मुक्त करवाने हेतु यज्ञ गमन व जुबाहु ताज़का वध का वर्णन।
6. षष्ठ सर्ग - में मिठिला नगरी का वर्णन राम एवं सीता का पूर्वार्राग तथा देवी स्तुति तथा श्री राम के द्वारा शिव धनुष भंग का वर्णन।

7. सप्तम सर्ग - राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न आदि का विवाह वर्णन।

8. अष्टम सर्ग - राम एवं सीता का अनुराग एवं सन्त वर्णन।

9. नवम सर्ग - अयोध्या लौटते समय मार्ग में युद्ध।

10. दशम सर्ग - श्री राम को बनवास भरत का ननिहाल से लौटते समय का वर्णन, राम भरत मिलन, रामसीता लक्ष्मण का चित्रकूट निवास एवं अन्त में सीता हरण जो कि इस काव्य को रचने का प्रमुख उद्देश्य रहा है।

11. एकादश सर्ग - वर्षावर्णन, रावण-जटायु युद्ध, सुग्रीव को बानरें का राजा बनाना आदि।

12. द्वादश सर्ग - शरदशहु का वर्णन सुग्रीव का अपने कर्तव्य से विमुख होना सुग्रीव के पास लक्ष्मण का जाना व लंका के लिए प्रस्थान।

13. त्र्योदश सर्ग - राम का सीता वियोग वर्णन सुग्रीव के द्वारा श्री राम को सान्तव्या दिया जाना।

14. चतुर्दश सर्ग - सेतुबन्ध व सेना का लंका में प्रवेश आदि है।

15. पंचदश सर्ग - राम का रावण को संदेश व अंगद नामक (बालिपुत्र) दूत भेजना।

16. षष्ठदश सर्ग - इसमें राक्षसों का ही वर्णन है।
17. समदिर्श से बीस तक के सर्गों में - कवि ने उन सर्गों में राम व रावण केसुद्र का वर्णन किया है विभिन्न चरणों में युद्ध व उसके योद्धा के बलन के साथ अन्त में श्री राम की विजय का वर्णन किया है।

महाकवि कालिदास के ही समान कवि कुमार दास ने भी बदभी रीति में काव्य का सृजन किया है।

अनुप्रास कवि कुमारदास का सर्वोच्च प्रिय अलंकार है। कवि के उल्लेखक रूप में कई पद्म प्रसिद्ध हैं जिनमें से एक यहां उद्धि है-

प्रातिको सामन्य प्रिय विप्रियोग
गलाने व रात्रि दयां मास साद।
जगाय मन्द दिवसो वसन्त क्रूर
रात्रि श्रात इव क्रमशेण।

कवि कुरार दास में परस्वन कवियों के अनुसार कालिदास की सरलता एवं प्रासंगिकता तथा भाविक एवं भंडू की वर्णन कौशलता की एक साथ प्राम अक्षर है। भंडू निरंतर एक सफल महाकवि के लेखक कहे जा सकते हैं।

इसके पश्चात प्रवर्तक का नाम रामकथा को अपने काव्य में स्थान देने वाले कवियों में आता है।

इनका महाकवि महाराणीस्वामी का सर्वप्रथम महाकवि माना जाता है। जिसको प्रवर्तक ने “सेतुबन्ध” नाम प्रदान किया था।

कुछ समीक्षक उसे रावण वध या दशमुख-वध भी कहते हैं।

इसको प्रवर्तक ने 15 आश्वासों में परिपूर्ण किया है।

डा. सुधीर कुमार गुप्त
इनका समय ई. की छठी शताब्दी मानते हैं। दण्डी के मतानुसार सेतुबन्ध शिक्षितों का सागर कहा गया है।

बाणभक्त ने भी सेतुबन्ध की कुल कहानी से प्रशासन की है।

सेतुबन्ध का कथानक रामायण पर ही आधारित है। इसमें कवि ने उख्या रूप से समुद्र पर पुल बनाने से लेकर रावण के वध तक के कथानक को चतुरता से बिस्तार से दिया है। उस काव्य में प्रसाद गुण सर्वें दिखाई देता है।

प्रवर्षेन के काल में, राजा लक्षमण सेन द्वारा वित्तसता नदी पर पुल बनाया गया था। कवि ने उस पुल का ही व्यजना से वर्णन करते हुए रामायण को आधार बनाया है।

प्रवर्षेन के पश्चात् भरुभेष्ठ को रामकथा से सम्बन्धित कवि के रूप माना जाता है।

डॉ. रामजी उपाध्याय के अनुसार यह कहा जाता है कि श्रीराम के चरित्र से सम्बन्ध निसी - सर्गतिमक महाकाव्य का रचनाकार भी उन्हें माना जा सकता है। क्योंकि इसका नाम भी राम विषयक काव्यों के लेखकों में परिणित होता है।

इनकी भाषा सरल संस्कृत मनोहर एवं प्रवाहशील है।

कविराज का मूलनाम माधवनिधि था। ये कादमबवंश के राजा कामदेव (1182-1197) ई. के आश्रित थे जिनकी राजधानी का उस समय का नाम जयन्तपुरी था जो वर्तमान कनांटक का जयन्त क्षेत्र कहलाता है। (1)

“राष्ट्रवाण्डव्रीयया” रचना जो कि अपने नाम से ही अद्भुत, प्रश्नित होती है वास्तव में अपने आप में अप्रतीत रचना है। इस महाकाव्य में प्रत्येक श्लोक में श्लेष अलंकार द्वारा रामायण एवं महाभारत
की कथा का साथ-साथ प्राणयन किया गया है। इस महाकाव्य की 
चमत्कारिकता से प्रभावित होकर परवर्ती अनेक महाकवियों ने उस प्रकार 
के ग्रंथों की रचना की प्रेरणा प्राप्त की थी।

इसके एक पद्य से इसका भाव स्पष्ट हो जाता है। -

रूप्येन कन्यां जनकेन दितिसामयोलिका लक्षभवितुं स्वयंवरे ।

द्विज प्रकर्षण स धर्मनन्दनः सहानुजस्ता भुजमान्यनीयता ॥

इस प्रकार एक ही पद्य में लेख कितना सरल है।

प्रथम अर्थ राम के तात्पर्य में लिया जाता है -

राजा जनक के द्वारा दी जाने वाली अयोध्या सीता को स्वयंवर 
में प्राप्त करने के लिए द्विज प्रकर्ष विश्वासित के द्वारा धर्मनन्दन श्री 
राम लक्षण सहित मिथिला को लाए गये।

द्वितीय अर्थ में महाभारत के अनुसार -

धर्मपुत्र युधिष्ठिर अपने छोटे भाइयों के साथ द्विज प्रकर्ष वेद-
व्यास के कथानालिका अयोध्या श्रीपदी को प्राप्त करने के लिए स्वयंवर 
में हुपद राजा के यहां पांचाल देश गए। इस प्रकार प्रत्येक पद्य 
में दोनों अर्थ निकलते हैं। चमत्कार प्रधान इयर्षाक कवियों में "राधवपांडवीय"
हत्त्वपूर्ण रचना मानी जाती है। इसमें 13 सर्ग हैं तथा कुल 
668 पद्य हैं।

इनकी भाषा स्पष्ट होने पर भी पांजल एवं आकर्षक है। करिज 
वक्षोक्ति के प्रभावशाली चित्रकार थे।

इनके पश्चात हरिदत सुरी का राधवनैषधीयम (राम व नल की 
कथा) पार्वती सुषमीयम् - पार्वती व सुषमी की कथा विद्या माधव 
द्वारा रचित। वैद्यधारी का यादवरांवीयम् आदि इसी प्रकार की 
रचनाएं हैं।(1)
इसके परमार्थ कुछ संस्कृत नाटकों में भी राम कथा को आधार बना करके रचना की गई है जिनमें महाकवि भाषा भी समिलित है उन्होंने मुख्य दो नाटक लिखे हैं।

1. प्रतिमा - इसमें 7 अंक है तथा राम के बनवास से लेकर राज्याभिषेक पर्यंत की घटना वर्णित है।

भरत को अपने नाना के यहां से लौटते समय एक स्थान मिलता है जहां पर उसे अपने पूर्वजों की प्रतिमाएं सुरक्षित रखी हुई दिखाई दी वही अचानक उसे अपने पिता की दसाथ की प्रतिमा दिखाई देती है जिसे देख कर वह चौंक उड़ता है।

शेष कथा रामायण पर आधारित है। कवि प्रतिमा संदर्भ ने कारण ही उसका नाम प्रतिमा नाटक रखता है।

अभिषेक - उस नाटक में भी 7 अंक है इसमें बालिवध से राम के राज्याभिषेक की घटना का वर्णन है। इसमें संक्षेपत वर्णित है।

महाकवि कालीदास से पूर्व के माने जाते हैं क्योंकि कालीदास ने अपने नाटक “भालविककायिमित्र” में कवि भाषा का उद्वेश दिखाया है।

भवभूति-संस्कृति नाटक साहित्य में भवभूति का अप्रतिम स्थान है ये कस्तुरा रस के सिद्ध हस्त कवि माने गये हैं।

उन्होंने भी रामायण पर आधारित नाटकों का यूज किया था।

महावीर चरित - इसमें 7 अंक है एवं रामायण का पूर्वार्द्ध (अर्थात श्री राम के विवाह से लेकर राज्याभिषेक पर्यंत) की घटना वर्णित है। रावण को इसमें उन्होंने शुरू से ही खलनायक प्रदर्शित किया है। जो कि हमेशा राम के विरुद्ध सबको उकसाता रहता है वह श्री
राम के विनाश के लिए ही सदैव विचारशील रहता है अनेकों पद्यक्षेत्रों की रचनाएं करता है। जब श्री राम शिव जी का धनुष भंग करते हैं तब वह परशुराम जी को उकसाता है, शूर्णखा के माध्यम से मन्यरा को उकसाता है एवं राज्याभिषेक में विध्वंस उपस्थित करता है।

बाति के युद्ध का कारण भी रावण ही है क्योंकि वह रावण का मित्र था। अन्त में रावण का वध करके श्री राम अयोध्या आते हैं एवं फिर उनका राज्याभिषेक होता है।

भवभूति के नाटक पर महाकवि भा, का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

उत्तर रामचरित - इस नाटक में कवि भवभूति ने भगवान श्रीराम के जीवन के उत्तरार्द्ध की घटनाओं से सम्बन्ध है।

इस कथानक के अनुसार राम का राज्याभिषेक के बाद सभी मेहमानों के जाने के समय अर्थत जनक जी एवं सभी ऋषिकों के जाने के बाद जब मुनि ऋषिश्रृंग के द्रादशवर्षीय यज्ञ में भाग लेने के लिए उनके द्वारा आमंत्रण प्राप्त करने पर कौशल्या सुभिरात्रि कैक्यी तीनों माताओं को भी वशिष्ठ एवं माता अरुणाथी के साथ जाना पड़ता है।

पिता जनक के जाने से गर्भवती सीता स्वाभाविक रूप से खिद्र होती है जिन्हें सान्तनवा देने के लिए श्री राम राज्यसभा से अन्तर्गर न में आते हैं।

यहिं से कवि भवभूति ने कथा को आरम्भ किया है।

“राम-सीता” के मनोरंजन का प्रयास करने का प्रयत्न करते हैं। उन्हें मुनि श्री अष्टाब्रक्ष-आकर प्रजा के प्रति उनके कर्तव्य का समरण करवाते हैं।
लक्ष्मण जी चित्रणाला के पूरी हो जाने की सूचना देते हैं जिस में श्री राम के भूतकाल की घटनाओं का चित्रण किया गया है। चित्रों को देखकर दुःखी सीता वन दर्शन की इच्छा व्यक्त करती है। एवं थक करके सो जाती है।

सीता के सोने के पश्चात राम का दुःख नामक सेवक सीता से समझ लोकोपवाद की सूचना देता है जिसे सुनकर विश्व होकर राम को सीता का त्याग करना पड़ता है एवं सीता निर्विश्वसित हो जाती है, प्रथम अंक में इन्हीं घटनाओं का विवरण है।

दूसरे अंक में मर्म नामक घटनाओं को 12 वर्ष पश्चात की अवस्था में वर्णित करता है।

इनमें सीता द्वारा तव-कुश नामक पुनर्जीवन की उत्पत्ति, वाल्मीकि का रामायण लिखने का ताल्पर्व एवं प्रभोजन श्री राम द्वारा स्वर्ण प्रतिमा स्थापना करें अश्वमेध यज्ञ करना व श्री राम को शामिल नामक शूद्र तपस्वी के वध के लिए वन आगमन की सूचना मिलती है।

तीसरे अंक में राम का पंचवटी में भ्रमण व सीता के विरोध में विलास करना प्रमुख घटना है जबकि सीता वहां विद्रोह मानती है।

श्री राम का इस स्थान पूर्व स्मृति से उत्पीड़ित होकर बार-बार मूर्चित होना करण उपलब्ध करता है सीता उन्हें पुन: संज्ञा प्रदान करती है।

इस अंक को करण रस की सजीव प्रतिमा कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

अगले अंक में जनक व कौशल्या का मिल सीता को याद कर दुःखी होना, अश्वमेध यज्ञ के अर्थ की रक्षा हेतु चन्द्रकेतु का धंडा पूर्वक कहे गये वचन एवं लव द्वारा घोड़े के पकड़ने की घटनायें निहित हैं।
पंचम अंक में लब एवं चन्द्रकेतु का विवाद होता है।

छठे अंक में कुश एवं चन्द्रकेतु के भीषण युद्ध का समाचार विद्याधर एवं विद्याधारी के आपसी वार्तालाप से जात होता है। श्री राम श्रम्भूक को मारकर वहां आते हैं तथा लब कुश को उनके चेहरे मोहरे) से पहचानते हैं।

सामान अंक में वाल्मीकि रामायण का आयोजन करते हैं।

उसमें सीता के त्याग का द्रौष्ट्रि दिखाया जाता है राम इसे देख कर मुन्निवित हो जाते हैं सीता प्रकट होती है एवं श्री राम को होश में लाती है। श्री राम सीता को पुनः ग्रहण करते हैं। यहां पर भवभूति ने नाटक को समाप्त कर दिया है।

यहां पर नाटककार ने मूलकथा में कई परिवर्तन करके उसे सुखाया कर दिया है। जबकि वास्तविक कथा का अंत दुखाता है क्योंकि अधि परीश्चा के पश्चात भी सीता का त्याग हुआ था अतः वे लवकुश को श्री राम को सीप पुनः उसी भूमि में समा जाती है जहां से वे जनक जी को मिली थी।

मूलकथा में चन्द्रकेतु एवं लवकुश के बीच किसी भी प्रकार का युद्ध नहीं होता है। परन्तु यहां उसे चित्रित करके स्वाभाविकता का समावेश किया है।

इस नाटक में करण रस का परिपाक पूर्णतः हुआ है। इस नाटक में अधिक कल्प उत्पन्न करने के लिए सीता को उस समय निर्विश्वासित किया गया है जब वे अपना गर्भकाल पूर्ण कर चुकी थी। अस्वस्त प्रसव वेदना के कारण वे गंगा की गोद में कूद जाती हैं। वही पर लब व कुश का जन्म होता है। पंचवटी में राम को उपस्थित करके भूतकाल की सुखद व दुखद दोनों ही स्मृतियों के कारण राम का विलाप करना करण उत्पन्न करता है क्योंकि उस समय तिस्कृत सीता भी दूसरी और विद्वाम थी जिसका उन्हें पता नहीं था।
के करुण रस को भवभूति इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं -

अनिर्विभि गंभीरनवादनस्मृत धन व्यय:।
पुत्रपुक प्रतीकाशो रामस्य करुणा रसः॥

सीता के परियाग के उपरान्त वासनी राम को उलझाना देती है -

त्वं जीवितं त्वमसि में हदयं
द्वितीयं त्वं कौमुदी नयनयोगमृत त्वमंगे।
इत्यादिभि: प्रियुशमेनसुरुष्य मुनयोः
नामेव शान्तमधवा किमत: परेण॥

कहा जाता है भूवभूति रसं निश्चित में सिद्ध हस्त थे। उनके
महावीर चरित में वीर रस एवं उत्तर राम चरित में करुण रस की
अभिव्यक्ति हुई है। इसलिए किसी ने कहा भी है -

“उत्तर रामचरिते भवभूतिरिविशिष्यते”

उत्तर रामचरित में रस की मधुरता नाटकीय चमत्कारिता एवं कला
की चाहता का अपूर्व समन्वय है साथ ही विभिन्न नवीनताओं के
साथ पुरातन कथा को नवीन रूप प्रदान किया है।

रामायण के आधार पर लिखे गये नाटकों में मुरारि का “अनर्घराघव”
एक प्रसिद्ध नाटक है। ये भवभूति के परवर्ती थे इनका समय
750 से 800 माना जाता है। मुरारि के नाटक “अनर्घराघवम्”
में 7 अंक है। महर्षि विश्वामित्र द्वारा यज्ञ रक्षार्थ राम-लक्ष्मण की
दशरथ से याथा से लेकर राम के राज्याभिषेक पर्वत की रामायणी
कथा का रोचक झंग से प्रस्तुत की गई है।

हर नाटक कार की तरह से मुरारि ने भी अपनी कल्पना से
कथा में कुछ परिवर्तन कर दिया है।
1. बालि का वध राम ने छिप कर नहीं प्रकट होकर किया। यहां बालि उत्सजित होकर राम से संग्राम करता है सुभीत से नहीं। यहां मुरारि ने वीरस को प्रधानता दी है।

2. पशुराम से संग्राम के लिए उद्धर राम के धनुष की टंकार पर सीता विचित्र कल्पना करती है।

3. कबन्ध, लक्ष्मण, युद्ध व गृह की रक्षा के विषय में भी कवि की नवीन कल्पनाएं है।

मुरारि के पश्चात राजशेखर का नाम लिया जाता है। वे महाराष्ट्र में उत्कृष्ट होने पर भी धन व यश प्राप्त के उद्देश्य से वे महाराष्ट्र से निकलकर कच्चे चले गये थे।

उन्होंने अपने नाटक बारामायण की रचना की। इसमें 10 अंक है, यह रामायण पर आधारित है।

इसके प्रथम तीन अंको राजा जनक के धनुष यज्ञ एवं रावण के व्यक्तित्व का वर्णन है। रावण का मिठिला आयान, महर्षि पशुराम से सहयोग प्राप्त करका, पशुराम द्वारा मना किये जाने पर वह दुःखी होता है। राम व सीता के विवाह को देख-देख कर दुःखी होता है।

चौथे अंक में राम एवं पशुराम के वार्तालाप का उल्लेख है। पांचवे एवं छठे अंक में रावण शूर्यनक्षा की सहायता से सीता हरण करने में सफल हो जाता है।

सातवें या अगले अंक में राम द्वारा समुद्र पर पुल बनाकर लंका पवेश करना।

आठवें अंक में परस्पर युद्ध एवं नवमें अंक में राम एवं रावण के युद्ध का वर्णन है जो कि इन्द्र के द्वारा करवाया गया था।
दशम अंक में राम लक्ष्मण व सीता आदि सभी पुष्पक विमान से अवगत्वा की ओर प्रस्थान करते हैं। इस नाटक में रावण का प्रभाव अधिक दिखाया गया है उसी से सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन, राम से सम्बन्धित घटनाओं की अपेक्षा अधिक दिखाई देता है।

कृतमाला नामक नाटक भी रामायण की कथा पर ही आधारित है। इसके नाटककार का नाम दिव्यनाग है जिनका समय 1000 ई. से माना जाता है। इस नाटक पर भवभूति के उत्तर रामचरित का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

इसमें 6 अंक है। राम के राज्याभिषेक के पश्चात सीता का परित्याग एवं राम के पुनःमिलन तक की घटनाओं का वर्णन है।

कवि ने अपनी प्रतिभा को प्रकृति चित्रण के माध्यम से व्यक्त किया है।

आश्चर्य चौहानी नामक नाटक के लेखक श्री शक्तिभूत आचार्य संताकार्य के शिष्य माने जाते हैं।

यह नाटक भी रामायण पर ही आधारित है। इसमें शूरुआती प्रसंग से लेकर सीता की अभिपरिक्षा तक की कथा का वर्णन है।

यह अद्वैत रस की वैदिक रीति में रचित उत्कृष्ट नाटक है।

इसे उत्तर राम चरित के बाद श्रेष्ठ नाटक कहा गया है। इसके लेखक का समय 788 से 820 राजकाल है।(1)

नवमी शताब्दी के प्रसिद्ध नाटककार दामोदर मिश्र ने हनुमन-नाटक की रचना की। यह रचना भी रामायण पर ही आधारित नाटक है।

इसमें 14 अंक है। इसकी रचना में लेखमात्र भी प्राकृत का प्रयोग नहीं मिलता है।
कुण्डनपुर के निवासी कवि जयदेव (गीतगोविन्द वाले नहीं) का समय 1200 ईं. (1) के लगभग रहा है। इनकी नाट्य रचना प्रसन्न राघव भी रामायण पर आधारित है। नाटककार ने अपने अनुसार कई मौलिक परिवर्तन किये हैं जिनसे उनकी साहित्यिक प्रतिभा का प्रदर्शन हुआ है।

इस प्रकार संस्कृत साहित्य में राम कथा की परम्परा चली आ रही है इसके परवाह हिन्दी साहित्य में रामकथा की परम्परा को देखने पर दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1. मानस पूर्ववर्ती राम काव्य धारा
2. मानस पश्चवर्ती राम काव्य धारा

<table>
<thead>
<tr>
<th>रचना</th>
<th>रचयिता</th>
<th>रचनाकाल</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1. रामचरितमालयण भूपति</td>
<td>गो. विष्णुदास</td>
<td>1342 ईं.</td>
</tr>
<tr>
<td>2. रामायण कथा</td>
<td>इश्वरदास</td>
<td>1492 ईं.</td>
</tr>
<tr>
<td>3. रावणमद्वदनि संबंध</td>
<td>मुनिलावप्रकृत</td>
<td>1500 ईं.</td>
</tr>
<tr>
<td>4. भरतमिलाप</td>
<td>इश्वरदास</td>
<td>1555 ईं.</td>
</tr>
<tr>
<td>5. अंगदपैज</td>
<td>इश्वरदास</td>
<td>1555 ईं.</td>
</tr>
<tr>
<td>6. रामसीताचरित्र</td>
<td>इश्वरदास</td>
<td>1580 ईं.</td>
</tr>
<tr>
<td>7. हनुमानचरित्र</td>
<td>सुन्दरदास</td>
<td>1616 ईं.</td>
</tr>
<tr>
<td>8. हनुमानचरित्र</td>
<td>ब्रह्मचार्यमहाजोगन</td>
<td>1616 ईं.</td>
</tr>
<tr>
<td>9. हनुमचरित्र</td>
<td>रायमलपाण्डी</td>
<td>1616 ईं.</td>
</tr>
<tr>
<td>10. रामचरित्र या रामरास (ब्रह्म)</td>
<td>जिनदास</td>
<td>1616 ईं.</td>
</tr>
</tbody>
</table>
उपर्युक्त रचनाओं को क्रमानुसार कालक्रम के हस्तक्षेपण से महत्वपूर्ण माना जाता है परनु इनमें से “रामायण” कथा को छोड़कर कोई भी रचना ऐसी नहीं कही जा सकती जो प्रवचन्द्यनक रामकथ्य धारा की जागृत चेतना को स्पष्ट करने में समर्थ कही जा सके ।

आचार्य रामचन्द्रशुकल के शब्दों को उद्धृत करना आवश्यक प्रतीत होता है । 

रामभक्ति का वह परम विशद साहित्यिक संदर्भ इन्हीं भक्त शिरोमणि द्वारा संपूर्ण हुआ जिसमें हिन्दी काव्य की प्रौढ़ता के युग का आरम्भ हुआ ।(1)

मध्यकाल में आगे चल कर रामभक्ति को लेकर धार्मिक उपासना का जो क्रमिक विकास हुआ, उससे प्रेरणा लेकर रामभक्ति को आधार बनाकर धार्मिक उपासना का जो विकास हुआ उसके बाद रामकथाओं के लिए पुरृषभूमि तैयार की ।

हिन्दी रामकथाओं का पूर्ण विकास याने के सम्पूर्ण (साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा भक्तिविषयक) विकास, सरल परनु सोचवृत्तपूर्ण भाषा में जो किंतु सामान्य की आकांक्षाओं को पूर्ण करने में सफल होता है केवल तुलसीदास जी कृत रामचरित मानस में ही मिलता है ।

अन्य रचनाएं उस निर्देश की नहीं हैं परनु साहित्यिक रूप से हम उनकी अनावश्यक भी नहीं कह सकते हैं । उन सभी का महत्व अपने-अपने स्थान पर साहित्यिक योगदान देने में सफल है । मानस-परवर्ती काल में रचित प्रवचन्द्यनक रामकथ्य धारा की रचनाओं को काल-क्रमानुसार इस प्रकार रखा जा सकता है ।
<table>
<thead>
<tr>
<th>रचना</th>
<th>रचनाकार</th>
<th>रचनाकाल</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1. राम अवतार</td>
<td>मलूकदास</td>
<td>कवि का जन्म स. 1631 तथा मृत्यु 1739 वि. माना गया है (1)</td>
</tr>
<tr>
<td>लीला</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>2. रामलतानहबू</td>
<td>गोस्वामीतुलसीदास</td>
<td>स. 1640 वि.</td>
</tr>
<tr>
<td>3. राम प्रकाश रामायण</td>
<td>मुनिलल</td>
<td>स. 1642 वि.</td>
</tr>
<tr>
<td>4. जानकीमंगल</td>
<td>गो. तुलसीदास</td>
<td>स. 1643 वि.</td>
</tr>
<tr>
<td>5. रामचन्द्रका</td>
<td>केशवदास</td>
<td>स. 1658 वि.</td>
</tr>
<tr>
<td>6. गुणपरायण</td>
<td>माधवदास पाराण</td>
<td>स. 1675 वि.</td>
</tr>
<tr>
<td>7. रामायण</td>
<td>कृष्णचन्द्र</td>
<td>स. 1700 वि.</td>
</tr>
<tr>
<td>8. हतुमानदूत</td>
<td>पुरुषोत्तम</td>
<td>स. 1701 वि.</td>
</tr>
<tr>
<td>9. सीताचारित्र</td>
<td>रायचन्द्र</td>
<td>स. 1713 वि.</td>
</tr>
<tr>
<td>10. अवधिविलास</td>
<td>लालदास</td>
<td>स. 1732 वि.</td>
</tr>
<tr>
<td>11. अंगदपर्व</td>
<td>लाळदास</td>
<td>स. 1732 वि.</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>आसपास</td>
</tr>
<tr>
<td>12. अवतार चरित्र</td>
<td>बाहरत नरहिरदास</td>
<td>स. 1733 वि.</td>
</tr>
<tr>
<td>13. रामचरितमेघ</td>
<td>नारायणदास</td>
<td>स. 1739 वि.</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>(उ.ग्र)</td>
</tr>
<tr>
<td>14. गोविन्दरामायण</td>
<td>गुरुरामदिसिन्ह</td>
<td>स. 1755 वि.</td>
</tr>
<tr>
<td>15. अवधसागर</td>
<td>जानकीरसिक शरण</td>
<td>स. 1760 वि.</td>
</tr>
<tr>
<td>16. सीतातिथ</td>
<td>रामप्रियाशरण</td>
<td>स. 1760 वि.</td>
</tr>
<tr>
<td>17. रघुद्रवंशदीपक</td>
<td>सहजराम</td>
<td>स. 1789 वि.</td>
</tr>
<tr>
<td>18. रामायण</td>
<td>भगवंतरायखराती</td>
<td>स. 1784 वि.</td>
</tr>
<tr>
<td>19. रामचरित</td>
<td>रामाधीन</td>
<td>18वीं शती का उत्तराध्य</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>20. रायण</td>
<td>राधाकृष्ण</td>
<td>18वीं शती की रचना</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>21. रामसामृतसिंह</td>
<td>स्वामीकृष्णपादिवासजी</td>
<td>1835 के आसपास</td>
</tr>
<tr>
<td>22. रामस्वलय वर</td>
<td>राजारघुराजसिंह</td>
<td>स. 1934 वि.</td>
</tr>
</tbody>
</table>
विदेशी साहित्यों में भी तिब्बती रामायण, होतानीरामायण, रामायणकालकालिन, चरितरामायण, हिकायतसरीराम, रामकेलिंग सततकाण्ड, पाताली रामकथा, रे आदके इ राम किये रामजातक, रामयागन, यामवे आदि में भी रामकथा विविध रूपों में उपलब्ध होती है।

भक्ति युगीन रामकथा की प्रधानति के अन्तर्गत हम जब भी विचार विमर्श करेगे हमें सर्वप्रथम गो। तुलसीदास जी का नाम लेना होगा।

उन्होंने रामचरितमानस, रामललानहदू, रामायणाराम, जानकीमंगल, पार्वतीमंगलगीतावली, कृष्णगीतावली, बिनयपत्रिका, सरस्वतीवारामायण, दोहावली, कवितावली, हतुमानबाहुक, वैरायंसवार्षी तससई, कुंडलियांरामायण, अंकावली, बजरंगबाबावली, बजरंगसाठिका, भशर्मिलाव, बिजयदोहावली, व्रहस्पतिकाम, बनवालीरामायण, छप्तरामायण, धर्मराय की गीता, धृतगप्पनवली, गीताभाषा, हतुमानसजय, हतुमानचलिस, हतुमानपंचक, ज्रानीपिका, राममुक्तावली, पदवंदरामायण, रसभूषण, साक्षी तुलसीदास जी की संकटमोचन, सतू-उपदेश मूर्त्यपुराण, तुलसीदासजी की बानी उपदेश दोहा आदि नाम उल्लिखित किये जाते है।

अग्रदास-आश्याम, ध्यानमझौ, रामन्ध्यानमझौ, कुंडलियां अथवा हितोपदेश, उपवाण्डा नामार्थ आदि। ये अग्रदास जी रामभक्ति के प्रसिद्ध ग्रन्थ अश्याम के प्रणेता के अलावा नामादास जी के गुरू भी थे।

नामादास-भक्तमाल। रामचरितमंगल। इन्होंने रामभक्ति में जान की उपेक्षा मधुरोपसना का अनुमोदन किया था। रामभक्ति परम्परा के अन्तर्गत जो मधुरोपसना का विकास हुआ उसमें यह अग्रिम अके नाम से भी प्रसिद्ध थे क्योंकि इस परम्परा में अली शब्द की छप प्राचीनतम है-अश्याम की कुछ पंक्तियां यहां उबलत हैं-

देखी झूलत राखड़ोल,
जनकसुता लीने संग सोभित गीत स्याम तन लोल।

34
हीरा पत्रा लालफिरोजा रतन खचित बेमोल,
कीडत रामजानकी दोउ बजे दुनुभी ढोल।।

नाभादास - अग्रदास जी के सर्वप्रमुख शिष्य के रूप में उल्लिखित किये जाते हैं। इनकी भक्तिवन्दना से सिद्धि से प्रभावित होकर इनके
गुरु ने इन्हें भक्तमाल नामक क ग्रन्थ रचने की प्रेरणा दी थी। रामायण,
रामचरितमानस आदि भक्तमाल की टीकाओं में -

प्रियदास लिखि-भक्ति सादोपधिनीदीका
लालवंद्रास लिखित - भक्तउमली
वेणणवदास लिखित - भक्तमालप्रणी
गुमानीलाल लिखित-फासीभक्तमाल
कीर्तिसिंह-गुरुसूखीभक्तमाल
तुलसीराम - भक्तिप्रदीप उद्दौँ
प्रतापसिंह - भक्तिकल्पमुद्रा
रघुराजसिंह - रामारसिकवाली
जीवारामलिखित - रसिकप्रकाशभक्तमाल
भारतेन्द्र - भक्तमालचउप्य
तपस्वीराम - रसूलमहोवफा
ज्वालाप्रसादसिंह - हरभक्तिप्रकाशिका
पुणाधारकुण्डास - भक्तनामालवलीहुआवदास
भानुप्रतापतिवारी - अंग्रेजीभक्तमाल
आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। उदाहरण -

जा दिन सीता जनम भयो,
जा दिन ते सब ही लोगिन को मन को शूल गयो।।

बालकुण्डास -

ध्यानमंजरी, नेहप्रकाश, सिद्धान्ततत्त्वविषया, दयालमंजरी, गंगालप्पुली,
प्रेमपहेली, प्रेमपरीक्षा, परतीतपरीक्षा उदा -
दुनहियादुल्ह बने दिलदार,
श्री जनकलली ये फलीभाष बस भलीदेव तहड़ारा ।

खपाल का सुपसखी नाम भी था ।

बालानन्द - इन्होने रामभक्ति में राम के बाल स्वरूप की उपासना का समर्थन किया है ।

कृपानिवास-के दक्षिण भारत के निवासी थे । गुरमहिमा, प्रार्थना
शतक, लगनपच्चीसी, युगलमाधुरीप्रकाश, भावना शतक, जानकीसहस्रनाम,
रामसहस्रनाम, जननवित्तमणि, समप्रबन्ध, नित्यमुख, रहस्योपा, वर्णोत्सव-
पदावली, रुपमूनसिद्धु रससारग्रन्थ, रहस्यपदावली, सिद्धांत-पदावली,
अष्टक, तथा अनुमत पवित्री उदा-

सुलख पिया मोहरी सिया की मुस्कानी ।

प्राणचन्द्रचौहान - दिल्ली निवासी थे रामायण महानाटक शीर्षक
परिसंद ग्रन्थ की रचना की थी । इसका रचनाकाल सन 1610 है।
यह नाटक, दोहे और चोपाईयों में लिखा गया है । इसमें लेखक
ने संपूर्ण रामकथा प्रस्तुत की है । सह हिंदी का सर्वप्रथम काव्यनाटक
माना जाता है ।

कातिक मास पवेच उन्नियारा । तीत पुण्य सोमकर वारा ।
ता दिन कथा कीन्ह अनुमाना । शह सलेम दिलीपति पाना ॥
संवेद सीरह से सतसंगा । पुण्य प्रगास पाय भय नाधा ।
जो सारदा माता करन दाया । बसनी आदि पुरुष की माया ॥

छात्राल - महाराजा छात्राल पत्ना के राजा समपत्राय के पुत्र
थे । इनकी रिखी अनेक कृतियाँ प्रसिद्ध है जिनमें रामायंत के कविता,
राम हवानाथक, हुमान-पच्चीसी, राधाकृष्ण पच्चीसी, कृष्णावतार के पद,
महाराजा छात्राल कृत अक्षर अनन्य के प्रसन, दीर्घती तथा राजनैतिक
दोहा, समृह प्रमुख है ।
सीतानाथ, सेतुनाथ, सत्यनाथ, संभुनाथ,
नाथनाथ, देवनाथ दीनानाथ दीनगति।

रायप्रिया शरणप्रेमकली - इनके प्रबन्धकाव्य सीतायन का उद्धेख मिलता है। उदा-

छब्रीली जनक ललित की जोरी

जनकी रसिक शरण-रसमाला-के अतिरिक्त रस्मालिनी रसमालिका,
के नाम से विच्छयात थे-अवधीसागर इनका एक उद्धिखित ग्रंथ है उदा-
सिबराम रूप अपर प्रश्न अवधी सागर यहाँ।

रामप्रप्त मधुराचार्य-ये मधुप्रिया के नाम से भी विच्छयात है इनके
लिखे हुए चार संस्कृत प्रमथों का उद्धेख मिलता है-भगवतगुणदर्पण,
माधुर्यकेलिकादम्बिनी, वाल्मीकिरामायण की टीका व रामतत्त्वप्रकाश
उदाहरण-

सखि में आजु गई सिय कुँज।

हर्षार्गं हरिसहवरः हरिया हरि तथा हरि कवि भी प्रसिद्ध है,
अश्याय, जानकीगीत प्रमुख है।

रामतापनीयोनिषद तथा रामस्तवराभाय ये सभी राम प्रप्त मधुराचार्य
की शिष्य प्रस्मिरा में से है।

सूर किशोर - मिथिला विलास, प्रयागदास भी रामकाव्य के रचिता है।

हुदयाराम-हनुमाननाटक की रचना की भी इसके अतिरिक्त सुदामा
चरित, रक्षणीमंगल, भी इनकी रचनाएं हैं।

कहीं हनू, कही श्री रघुवीर कहु सुधि है सिय की छित्र माँही।
हे प्रभु लंक कलंक बिना सुबसे, तहं रावण बागकी छाही।

रामसङ्गे, दैत्यभूषण, पदावली, रूपसामूर्त सिन्धु, वृत्ताराध्यमिलन
dोहावली, नृत्ताराध्यमिलन कवितावली रास्यपद्धति, दानलीलाबानी,
मंगलशंकर, तथा राममाला, प्रेमसवी, श्री सीताराम नवशिख, सियासवी,
अष्टादातावली, रूपसरअपी-सीताराम रहस्य चन्द्रिका, रसमंजरी,
gुख्तापआदर्श श्री गुरु।

अनामक जातकमू, तथा दशरथ कथानमू में राम-कथा का उद्देश्य
मिलता है। जैन धर्म से सम्बन्धित साहित्य में भी हेमचन्द्र लिखित
‘जैन रामायण’ जिन्दास लिखित ‘राम-पुराण’ पद्मदेव विजयगण्य लिखित
‘रामचरित’ एवं सोसेन लिखित ‘रामचरित’ में भी राम-कथा का समावेश
हुआ है।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में राम की नर लीला
का वर्णन करते हुए राम भक्ति की महत्ता प्रतिपादन करते हुए, काव्य
के सभी अंगों का समावेश करके रूपक दिया है।

सम प्रबन्ध सुगम सोपाना। ध्यान नयन निरखत मन माना।
रघुपति महिमा अगुन अवाघा। वस्तव सोइ बर बारि अगाधा।
राम सीय जस सलिल सुधा सम। उपमा बीचि बिलासमोगमा।
पुरान सच्च चारू चोपाई। जुगुति मंजु मनि सीप सुहाई।
छंद सोरठा सुन्दर दोहा। सोइ बहु रंग कमल कुल सोहा।

तुलसीदास जी ने काव्य का शिक्षक के तत्त्व से सुकू बुना
आवश्यक बताया है। इसलिए उन्होंने नर-काव्य की रचना नहीं की।
अपने अधिकांश ग्रंथों में तुलसीदास ने अवधि भाषा का प्रयोग किया
है। संस्कृत के उच्च ज्ञान के कारण उनकी भाषा में संस्कृति-निष्ठा
अपेक्षाकृत अधिक मिलती है। अवधि के साथ-साथ भ्रज-भाषा का
आंशिक समावेश भी उनके काव्य में मिलता है। कुछ कृतियों विशेष
रूप से ‘कवितावली’, गीतावली, दोहावली, तथा विनयपत्रिका, में तो
ब्रज-भाषा अत्यन्त परिमार्जित रूप में मिलती है।

राम-कथा का बिस्तृत रूप से वर्णन करते हुए तुलसीदास जी ने आध्यात्मिक और दर्शनिक विषयों पर भी विस्तार से विचार किया है। ब्रह्म, माया, अवतार, जीव, मुक्ति, ज्ञान भक्ति आदि के विषय में तुलसीदास जी के विचार महत्वपूर्ण हैं। भगवान राम की विषय का अवतार माना है। उनके नाम और रूप को होने ईश्वर की उपाधि बताया है। ब्रह्म के निर्गुण और समुच्छ रूपों की तुलना में राम-नाम का महत्व। उन्होंने विशेष रूप से प्रतिपादित किया है। माया को तुलसीदास ने एक शक्ति माना है जो निर्गुण भक्ति को समुच्छभक्ति में परिवर्तित कर देती है। लोकल के और आध्यात्मिक दोनों ही अर्थों में कवि ने माया के प्रभावों का वर्णन परमेश्वर की रचनाशक्ति के अर्थ में किया है। ब्रह्म के निर्गुण और समुच्छ रूपों की तुलना में राम-नाम का सत्ता स्पष्ट की है। माया से मुक्ति तब तक असम्भव है जब तक जीव के हद्द में ज्ञान और भक्ति के साथ-साथ रामकृपा का प्रकाश हो। कवि ने ब्रह्म, बिष्णु और महेश को भगवान राम के अंशों से उत्पन्न बताया है। स्वर्ग हनुमान ने एक स्थान पर रावण को चेतावनी देते हुए उससे कहा है कि राम के अतुलन न होने पर सहवों शिव, बिष्णु तथा ब्रह्म भी उसकी रक्षा नहीं कर सकते।

तुलसीदास जी ने भगवान राम के अवतार का कारण ब्रह्मणों, ऋषियों, मुनियों आदि की रक्षा तथा अन्याय, अधर्म आदि का निर्मूलन बताया है।

जीव के विषय में गोस्वामी तुलसीदास जी का यह मत है कि वह ईश्वर का अंश है इसीलिए वह ईश्वर के आधीन रहता है। जीव की जागृति, स्वप्न तथा सुप्रस्त तीन अवस्थाएं होती है। जीवों की अनेक कोटियां होती हैं जिनमें वह मुक्ति का प्रधान साधन मानते हुए भक्ति का असाधारण महत्व प्रतिपादित किया है।

नर सहम हर सुनहु पुरारी। कोउ एक होइ धर्म ब्रतवरी।
धर्मसील कोटिक महं कोई। विषय विमुख विराग रत होई। कोटि विरत मध्य शूक्त करई। सम्प्रद क्यान सकृत कोई लहई।
म्यानवंत कोटिक महं को। जीवन मुक्त सकृत जग सोउ।
तिन सहस्र महं सब सुख खानी। दुर्लभ ब्रह्म लीन विम्यानी।
धर्मसील विरत अरु ध्यानी। जीवनमुक्त ब्रह्म पर प्राणी।
सबते सो दुर्लभ सुराया। राम भगवति रत गत मद माया।

तुलसीदास ने रामार्जय की कल्पना की श्री जो वस्तुतः एक
धर्मार्जय था। राजसाधकी हृदिकोण से यह राज्य राजस्त्र था जिसमें
प्रजा को लोकतंत्रात्मक स्तर पर स्वतंत्रता प्रदान की गयी थी। यह
राज्य धर्मनिरपेक्ष न होकर धर्मार्जय था जिसका विधान धर्म-प्रन्तों
के अनुसार था। ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में राजा इसका प्रवधान शासक
होता था और उसके पराक्राट उसका ज्येष्ठ पुत्र राजा बनता था।
राज्य में शक्ति, नीति, ऐश्वर्य, धर्म, प्रताप, शील, सत्य, विवेक, बुद्धि
आदि सदृशुणों की निहित होती थी। राजा के लिए नीति के अनुसार
ही कार्य करना प्रचंड विधान था। रामार्जय में तुलसीदास ने एक
सामाजिक आदर्श की स्थापना की जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और वर्ग
के पारंपरिक अधिकार और कर्त्तव्यों का विवेचन किया है। रामार्जय
के गौरव का निरपेक्ष करते हुए तुलसीदास ने उसमें अपने समान्यवादी
हृदिकोण का समावेश भी किया है।

‘रामचरित मानस’

गोस्वामी तुलसीदास जी की सर्वप्रधान रचना ‘रामचरितमानस’ है
जो संवत 1631 में आरम्भ होकर 1633 में समाप्त हुई थी। सात
काढों में विभाजित इस महाकाव्य में तुलसीदास ने भगवान रामचन्द्र
की कथा का वर्णन किया है। दशकों से लंका की जीतकर रावण
का वहां राज्यार्में, उसके अल्पार्चारों से तस्त पृथ्वी का देवताओं
की शरणगमन, आकाशवाणी द्वारा रामवंतिर की घोषणा, दशरथ के
यहां कौशल्या, कैकेन्द्री और सुभिम्मा से राम, भरत, लक्षण, और
श्रुण्ण का जन्म, विन्यासित का राम और लक्षण की सहायता से
यश संपन्न, राम-लक्षमण द्वारा असुसंसार सीता की स्वर्णबार योजना। रावण और बाणासुर का अभिमान नष्ट होना, राम द्वारा धनुषभंग और सीता से विवाह । राम के राज्यतिलक की योजना परन्तु फिर राम बनवास, दशरथभरण, सूर्यमुख प्रसंग, खरदीशन-वधा, रीताहरण, राम का सेनानियोजन तथा लंका पर आक्रमण, रावण-वध तथा राम का अयोध्यापुर वापस आने पर राज्याभिषेक आदि का विस्तार से वर्णन इस महाकाव्य में हुआ है।

प्रसंग रूप से इनमें एक बड़ी संख्या में सपूत कथाओं का समावेश किया गया है तथा प्रसंगातुसार ही अनेक आध्यात्मिक दर्शनिक विषयों का निरूपण किया है। तुलसीदास की भक्ति-भावना भी रामचरितमानस के सन्दर्भ में स्पष्ट होती है। राम-काल्य की परम्परा में रामचरितमानस को इस गुण की सर्वोच्च उपलब्धि के रूप में मान्य किया जाता है।

‘गीतावली’

‘गीतावली’ में तुलसीदास जी ने गीति-शैली में रामकथा का वर्णन किया है। कहा जाता है कि इसे ‘पदावली रामायण’ तथा ‘रामगीतावली’ नाम भी दिया गया था। वह रचना भी सात पृथक् खंडों में विभाजित है और इसमें कथा के अंशों का विभाजित लगभग उसी रूप में हुआ है जिस रूप में ‘रामचरितमानस’ में पृथक्-पृथक् खंडों में मिलता है। इस कृति में रामचरित को अत्यन्त सरस शैली में वर्णित किया गया है। आध्यात्मिक और दर्शनिक विषयों का गम्भीर और गूढ़ विवेचन इसमें नहीं मिलता है। गीतावली की अनेक प्रतियाँ उपलब्ध होती हैं जिनकी प्रामाणिकता और प्रक्षिप्तता के विषय में विवादों में मतभेद है। रामकथा का विकास इसमें भी अधिकांशतः रामचरितमानस के आधार पर ही हुआ है परन्तु अनेक प्रसंगों में कुछ अंतर इसमें मिलता है। इसका कारण भी सम्भवतः यह है कि इसके माध्यम से कवि रसात्मक रूप में राम का कथा-गान करना चाहता था और इसीलिए मानवीय स्तर पर ही इसमें कवि ने भावाभिव्यंजना प्रस्तुत की।
'विनयपत्रिका'-

'विनयपत्रिका' में तुलसीदास जी ने राम-भक्ति और राम के प्रति आत्मनिवेदन के स्तुतिपर्व पद संगृहीत किये हैं। राम के अतिरिक्त इनमें गणेश, शिव, पार्वती, गंगा, यमुना, काशी, चित्रकुट, हनुमान, सीता और विष्णु आदि की स्तुति में कहे गये पद प्रस्तुत किये हैं। मुख्य भावना राम-भक्ति कामना की है और सभी देवी-देवताओं की स्तुति के माध्यम से कवि ने राम-भक्ति का वरदान मांगा है। भगवान राम से प्रत्यक्ष भक्ति-निवेदन न करके हनुमान, शत्रुघ्न, भरत और लक्षmana के माध्यम से तुलसीदास उनकी अनुकूल्या की आकाशा करते हैं। हिन्दी भक्ति-काव्य में आत्म-निवेदन के रूप में जो काव्य लिखा गया है उसमें 'विनयपत्रिका' का सर्वोच्च स्थान है।

'दोहावली'

गोस्वामी तुलसीदास लिखित 'दोहावली' में 573 दोहे संगृहीत हैं। इसकी अनेक प्रतियाँ उपलब्ध हैं जिनके विषय में विद्वानों के विविध मत हैं। जितने भी दोहे इसमें संगृहीत हैं उनमें से बहुत से अन्य कृतियों में भी मिलते हैं। दोहावली में संगृहीत दोहों में मुख्यतः भगवान राम के प्रति भक्ति की भावनात्मक अनुसार और एकनिष्ठा का वर्णन है।

'कवितावली'

गोस्वामी तुलसीदास की लिखी हुई 'कवितावली' शीर्षक रचना में ब्रज-भाषा में लिखे हुए कविता और कवैया छंद संगृहीत हैं। तुलसीदास के विविध स्फूर्त काव्य-ग्रन्थों की भांति इसमें भी राम-भक्ति तथा आध्यात्मिक-दार्शनिक विषयों से सम्बन्धित छंद मिलते हैं। इसमें भी कवि ने चंद-विभाजन रामकथा के विविध कांडों के अनुसार ही सात भागों में किया है। राम-कथा का क्रम-निर्वाह इसमें भी हुआ है यद्यपि विविध प्रसंगों के अनुसार कहीं-कहीं विषय में अत्यन्त
संक्षिप्तता और कहीं पर अत्यन्त विस्तार भी मिलता है। ईश्वर के प्रति भक्ति के आत्मनिवेदन के पद इसमें भी मिलते हैं। तुलसीदास जी के विविध काव्य-प्रमाण में से कुछ प्रसंग उदाहरणांक नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

प्रभल प्रचंड बरिबंद बाहुबंद वीर,
धारे जानुखान, हनुमान लिये थे रेखे।
महाबल पुंज कुंजरारि ज्यों गरजि फेरिके,
जहैं तहाँ पटके लंगूर फेरि फेरिके।
मारे लात, तोरे गात, भांडे जात, भांडा खात,
हें तुलसीदास “भांडे राम की सो” टेरिके।
ठहर ठहर गरे, कहरि कहरि उठे,
हरहर ठहरि हर सिद्ध हंसे हेरिके।

जासु कुमा सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहना।
नील सरोहु स्थाम तनन अरुन बारिज नणाने।
करउ सो मम-उर धाम सदा छीर सागर सयन।
सुंदर इतु सम देख उमा रामन कहना अयन।
जाहि दौन पर नेह करउ कुमा मरदन मयन।
बंदुं गुरु पर कंजु कुमा सिंधु नरसु हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन राव कर निकर।

|| रामचरितमाणस बंदना।

नाम भरोस, नाम बल, नाम सनेह।
जनम जनम रघुंनदन तुलसिहि देहु।
जनम जनम जहं जहं तुसिहि देहु, तहं तहं रामनि बाहिब नाम सनेहु।

रामायण काव्य परम्परा में स्वामी अग्रदास जी का महत्वपूर्ण स्थान है। स्वामी अग्रदास जी राम-भक्ति के प्रसिद्ध प्रथम ‘अध्ययाम के प्रणेता’ थे। यह भक्तमान के लेखक स्वामी नारायणदास या नारायणदास के भी गुरु थे। प्रियादास जी ने इनके विषय में उल्लेख किया है जिसके
अनुसार यह आमेर के राजा मानसिंह के समकालीन थे जो अकबर के दरबारी थे। इसी अनुमान पर अग्रदास जी का समय सन 1556 के लगभग अनुमानित किया जाता है। इन्होंने राम-भक्ति में श्री अपेक्षा मधुरोपासना का अनुभोधन किया था। इनकी एक प्रशस्त शिक्षा, परम्परा थी। जंगी, प्रयागदास, विनोबी, पूनन्दास, बनवारीदास, नरसिंहदास, भगवानदास, दिवाकर, किशोर, जगदास, जगनाथदास, सल्किघों, खेमदास खीची, धरमदास, लघु ऊघो आदि थे। इनके जीवन के सम्बन्ध में जो विचरण उपलब्ध है उसके अनुसार यह राजस्थान में जन्मे थे। बचपन में यह श्रीकृष्णदास पवहारी के शिष्य हुए। बाद में इन्होंने अपनी पृथक गद्दी बनाई जिसमें नाभादास, देवसुरारी, पूर्णवैराठी, दिवाकर तथा भगवानरायण आदि आचार्य हुए। रामभक्ति परम्परा के अन्तर्गत जो मधुरोपासना का विकास हुआ उसमें यह अग्रानी के नाम से भी प्रसिद्ध थे क्योंकि इस परम्परा में अली श्रव्द की छाप प्रचीनतम है। अग्रदास जी की लिखी हुई कृतियों में ‘ध्यान मंजरी’ अथवा ‘रामध्यानमंजरी’ ‘कुंदलिया अथवा हितोपदेश उपखंडा वामनी’, ‘श्रंगार रस सागर अथवा अग्रसागर’ आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। संस्कृत में इन्होंने ‘अष्ठाय’ नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की थी। अग्रदास जी के काव्य का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

देखो झूलत राधो ढोल।
जनक सुता लीने संग सोभित गौर स्याम तन लोल।
हीरा पत्ता लाल पिरोजा रतन खचित बेमोल।
क्रीडल राम जानकी दोऊ बजे दुनदभी ढोल।
हंसत परसपर प्रीतम प्यारी आनंद बढ़यो सचोल।
श्री ‘अग्रानी’ सुनि-सुनि सुख पावति बोलाहि मीठे बोला।

स्वामी अग्रदास जी के बाद नाभादास जी भी रामकाव्य परम्परागत अन्तर्गत आते हैं। नाभादास अग्रदास जी के सर्वप्रमुख शिक्षा के रूप में उल्लेखित किये जाते हैं। अग्रदास के पूर्ब इनकी गुरु-
परम्परा में कृष्णदास पवहरी, अनन्तानन्द तथा रामानन्द हुए थे। कहा जाता है कि इनकी भक्ति भावना और सिद्धि से प्रभावित होकर इनके गुरु ने इन्हें भक्तमाल नामक ग्रन्थ की रचना करने की प्रेरणा दी थी। इनके जीवन के समय में जो विवरण उपलब्ध होता है उसके अनुसार यह बचपन से ही नेत्रहीन थे। पाँच वर्ष की आयु में ही इनकी मां ने अकाल के समय इन्हें किसी बन में छोड़ दिया था। संयोगवश कील्ह तथा अद्वास ने इन्हें उस मार्ग से गुजरने पर उठा लिया और कमँडल के जल के छीट देकर इनके नेत्र ठी कर दिये। फिर महात्माओं के सत्संग में इनका पालन-पोषण हुआ। प्रियादास जी इन्हें अनुमान वंश का बताते हैं। तुलसीराम तथा तपस्वीराम ने इस वंश के प्रत्येक में रामदास का नाम लिया है। इस वंश के समुद्र में अनेक विद्वानों के भी पृथक-पृथक मत हैं। इस सम्प्रदाय के अन्तर्गत इनका नाम नाभावली था। इसके पूर्व इनके रायणदास नाम का भी उल्लेख किया जाता है। भक्तमाल के अतिरिक्त इनकी एक अन्य रचना ‘रामाश्याम’ शीर्षक से भी प्रसिद्ध है। ‘रामचरितमंगल’ नामक एक अन्य ग्रन्थ भी इनका रचा हुआ बताया जाता है। भक्तमाल शीर्षक ग्रन्थ का राम-भक्ति-परम्परा में बहुत महत्वपूर्ण सीन रहा है। इस ग्रन्थ की अनेक टीकाएं की गयी हैं और उनका एक पृथक परम्परा-सी विकसित हुई है। भक्तमाल में रामानन्द सम्प्रदाय का संपूर्ण विवरण उपलब्ध है। यह ग्रन्थ ब्रजभाषा में लिखा गया है जिसमें छपप्प, दोहा, छंद आदि का प्रयोग है। भक्तमाल की टीकाओं में प्रियादास लिखत

नाभादास के बाद रामकाव्य परम्परा में बालकृष्ण जी का महत्वपूर्ण योगदान है। बालकृष्ण जी बालअली के नाम से भी विख्यात हैं। यह विनोद स्वामी अथवा विनोदजी, ध्यानदास और चरणस शिष्य परम्परा में थे। इनका रचना काल संवत् 1726 से लेकर 1749 के मध्य बताया जाता है। इनके लिखित छठे में ‘ध्यानमंजरी’ नेह्प्रकाश, सिद्धान्त-तत्त्वदीपिका, दयालमंजरी, ग्वालपहेली, प्रेमपहेली ग्रंज-परीक्षा तथा परतीतपरीक्षा आदि कृतियाँ है।
हुदयराम के बाद यह परम्परा सत्तल चलती रही। हुदयराम के बाद रामसखे का भी योगदान रहा है।

स्वामी रामसखे का समय 18वीं सहादर्श का प्रामाणिक काल माना जाता है। यह आचार्य वंशावली के शिष्य थे। इनके शिष्यों में चित्रिनंदिंद, स्यसिंह आदि थे। रामसखे जी की रची हुई कृतियों में देवभूषण, पदावली, रससागरमृतसिंह, नृत्यारविगकुंल रोहावली, नृत्यारविगकुंल कवितावली, रसपदकशित, दानलीला, बाँ, मंगलशस्त्रादि, तथा ‘रामाला’ आदि हैं। उनकी वंश परम्परा में आगे चलकर स्वामी अवधशारण भी हुए थे जिनके पिता का नाम रामदयालु था। उन्होंने स्वामी लक्ष्मणाचार्य से दीक्षा ली थी। उन्होंने प्रसिद्ध न्यायसाहित्य से दिव्य भक्ति को शास्त्रार्थी में पराजित किया था। महाराज रघुराजसिंह, पं. रामधीन, पं. उपाध्यास आदि भी इनके संपर्क में रहे थे। यह अपने समर्थन में ‘लाल साहब’ के नाम से भी प्रख्यात थे। इनके लिखे हुए ग्रन्थों में ‘साध्यपुरुषदिव्य’ प्रसिद्ध है।

रामसखे के बाद इस परम्परा को आगे बढ़ाने का काम प्रेमसखी ने किया।

स्वामी प्रेमसखी ने चित्रकूट के महात्मा रामदस गूढ़ से दीक्षा ली थी। इनके लिखे हुए ग्रन्थों में ‘होली, कवितादिप्रवचन तथा ‘श्री सीताराम नखशिक आदि हैं। इनके काव्य का एक उदाहरण इस प्रकार है:-

कागद ती न उठे कर ते कर लेखनी कंपित कौन उठावे।।
लालन दृष्टि परी जब के प्रिय नाम सुने अंसुवा जीरे लावे।।
‘प्रेमसखी’ मधु की मक्खियों मन जाय फंस्यों अब हाय न आवे।।
मूरत श्री रघुनन्दन की लिखते न बनै लखते बनि आवे।।

सियासखी भी इसी कल्याणाराम में आती है। स्वामी गोपालदास सम्प्रदाय ने सियासखी के नाम से विख्यात थे। ये झांसूदास जी
के शिष्य थे। सीताराम मंदिर की गद्दी अपने अनुज चंद्रकाली का नाम बनावू दास था जिनकी एक रचना ‘अष्ठायमपदवली’ नाम से उल्लिखित की जाती है। सियस्वरी जी के पुत्र रामानुज दास रूपसरस के नाम से विख्यात थे। इनके शिष्य चंद्री के युवराज सीतारामशरण के नाम से प्रसिद्ध हुए थे। रूपसरसजी की कृतियों में ‘सीताराम राहस्यचंद्रिका’, रसमंजरी, गुप्तपताकादर्श, तथा श्रीमुखाचैमहात्म्य, आदि है।

रामप्रसाद जी भी इसी काव्यधारा के कवि हैं। स्वामी रामप्रसाद ‘बिन्दुकाचार्य’ के नाम से विख्यात हैं। इनके युवा आचार्य बसावन थे। आगे चलकर इन्होंने महात्मा लक्ष्मीराम से दीक्षा ली थी। इनके पुत्र का नाम रामभुज तथा पुत्री का नाम रामकुमारी था। इनकी रचनाओं में ‘शिक्षा प्रति’ तथा ‘गीतात्मरित्विनिर्णय’ उल्लिखित की जाती है। इनकी शिष्य परम्परा में महात्मा मनोराम भी हुए थे। कहा जाता है कि यह स्वामी रामचरदास की कृतियों में ‘अनुमल्लकंडा’, शतपंचसिखा, रसमल्लिका, रामपदली, सियारामसमझ, सेवाविधि, छप्पयामायण, जयमल संग्रह, चरणचिन्ह, कविताली, द्वाशंकोधिक, तीर्थयात्रा, विरहशतक, बैराम्याश, नामशक, उपासनाशतक, विवेकशतक, पिंगल, अष्ठायम सेवाविधि, कविताली, काव्यश्रृंगार, दृश्य, कौशलरंजन सरस्वती रामचरदास की दीक्षा, तथा रामनवमलसंग्रह है। इनके शिष्यों में जीवाराम ‘युगलप्रिया’, जकरा किशोरीशरण रसिकली’ और हरिदास के नाम उल्लेखनीय हैं। जीवारामजी शंकरदास के पुत्र थे। इन्होंने ‘रसिकप्रकाश, भक्तमाल, पदाली, श्रृंगार रहस्य, तथा अष्ठायमविनिक, की रचना की थी। स्वामी जनकराज किशोरीशरण ‘रसिकली’ के नाम से भी विख्यात है। इनका जन्म सन् 1818 के लगभग तथा मृत्यु 1848 में हुई थी। यह काठियावाड़ के निवासी थे। बचपन में ही यह ओद्या आकर रहने गए थे और राजारघवदास को इन्होंने अपना गुरु मान लिया था। आगे चलकर यह रामचरदास के शिष्य हो गये थे। तभी यह ‘रसिकली’ के नाम से विख्यात हुए थे। इनके लिखे हुए ग्रन्थों में ‘सिद्धान्त मुक्ताली, अनन्तरंगणी, आन्दोलरहस्यदीपिका,
रामप्रसाद के बाद रामकाव्य धारा में शिवलाल और केशवदास जी का महत्वपूर्ण योगदान है। स्वामी शिवलाल पाठक गोरखपुर जिले के निवासी थे। इनका जन्म सन 1756 में हुआ था। इनके पिता देवीदत्त पाठक और माता सोलंकी देवी थीं। इन्होंने शिवलोचन शाखा से शिक्षा प्राप्त की थी। स्वामी रामप्रसाद से भी अधिक सम्बन्ध था। इनकी रचनाओं में ‘मानसमयक’, ‘मानस-अभिप्रयादोपक’ तथा ‘बालमीक रामायण’ की भावप्रकाश टीका आदि है।

आचार्य केशवदास जी के बारे में कौन नहीं जानता। आचार्य केशवदास की जन्म-तिथि के सम्बन्ध में विभिन्न मतभेद आचार्य केशवदास जी और उनके राजकीय ज़िरहों के महाराज इंद्रजीत सिंहजी के राजकीय थे। उनके पिता का नाम काशीनाथ था जो मथुरा में राजपुरोहित थे। राम-काव्य की परमपरा में केशवदास का लिखा हुआ ‘रामचंद्रिका’ शीर्षक ग्रन्थ प्रकाशित है। रामचंद्रिका में केशवदास ने रामकाव्य को पूर्ववर्ती कथा-परमपरा की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किया है। इस दृष्टि से इसमें विश्वास प्रस्तुत है। उन पर संस्कृत के माध्यम से हिन्दी साहित्य के विश्वसनीय संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट: देखा जा सकता है। ‘रामचंद्रिका’ प्रस्तुत राम-कथा पूर्ववर्ती परमपराओं से हुए भी पर्याप्त मौलिकता लिए हुए प्रतीत होती है। इसका मुख्य कारण यह है कि ‘रामचंद्रिका’ में कवि ने जिन पत्तों की चरित्र योजना की है वह अपेक्षाकृत मानवीय गुणों से युक्त है। ‘रामचंद्रिका’ में केशवदास ने प्रवचनकाव्य के तत्त्वों का निर्माण करते हुए आलम्बन, उद्दीपन, अलंकृत, मानवीकृत आदि रूपों में प्रकृति का चित्रण किया है। ‘रामचंद्रिका’
में कवि ने यह स्पष्ट संकेत किया है कि इसका उद्देश्य राम श्री
चंद्र के प्रकाश की छवि दिखाना है। उन्होंने रामचंद्र को अपना
इस मानकर उनका गुणगान किया है। केशव ने यथार्थ राम-कथा
प्रायः संपूर्ण रूप में ही प्रस्तुत की है परंतु उनकी कमबद्धता का विशेष
विचार नहीं रखा है। अनेक प्रसंग जो पूर्ववर्ती राम-कल्याण में विस्तार
से वर्णित है, केशव ने केवल औपचारिक रूप से ही प्रस्तुत किये
हैं। एक अलंकार-शाखी होने के कारण केशव ने इस ग्रन्थ में महाकाव्यत्व
के निर्वाह की ओर उत्तर नहीं काल्याण-सौभाग्य की दृष्टि से ‘रामचंद्रिका’
का महत्व-निर्विवाद है। रामचंद्रिका के पूर्वबंध-और-उत्तरार्द्ध में कुछ
पौराणिक संदर्भ भी प्रसंगित रूप में समाविष्ट किये गये हैं। परबती
राम-साहित्य पर भी रामचंद्रिका का व्याख्या प्रभाव पड़ा है। रसिकगोबिन्द
लिखित ‘रामायण सुचिनिका’, लेखिकर्म लिखित ‘रामचन्द्र-मूल्यूण’, गुरूगोबिनदसिंह
लिखित ‘गोविन्दरामायण’, रामप्रियाशरण लिखित ‘सीतायन’, रघुराजसिंह
लिखित रामस्वयंबर’, रसिकलाल बिहारी लिखित ‘रामसायण’, जानकीप्रसाद
लिखित ‘रामनिवासरामायण’, नवशिंह लिखित ‘राम-चंद्रबिलास’, रामचंदर
उपाध्याय लिखित ‘रामचंदरिचंतिमणि’, बलदेवप्रसाद मिश्र लिखित
‘कौशल किशोर’ आदि में राम-कथा का निर्वाह मिलता है।

रामगुलाम हिंदी का कवियत्व शैली कवि है। श्री रामगुलाम
हिंदी की मिलापपूर्ण के निवासी थे। इनके गुरु रामप्रसाद जी थे। इन्होंने
‘कवित प्रवंध’, ‘रामगीतावली’, ‘ललित नामावली’, ‘विनय नव पंचक’,
दोहावली-रामायण, हुमायूनाधार, रामकृष्ण सत्रक, श्रीकृष्णपंचाल्पंचक,
श्रीरामकृष्ण, रामरथर रामस्तराज तथा बरबा आदि ग्रन्थों की रचना
की थी।

विश्वनाथ सिंह जू देव भी इसी परम्परा से अनुप्राणित रहे।
महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव रीवा ने रेश जयसिंह के पुत्र थे। इन्होंने
महाराजा प्रयादस से दीक्षा ली थी। इनके लिखे हुए अनेक ग्रन्थ
हैं जिनमें से प्रमुख ‘रामगीता ठीका’, ‘तत्वमस्तरसिद्धांत भाष्य’, राघवाध्वी
भाष्य, सर्वसिद्धान्त, रामरथर ठीका, दैशाव सिद्धान्त, ।
रामचंद्रिकान्निहिक तिलक, रामसागरान्निहिक तिलक, रागसागरान्निहिक, 
संगीतपुन्नदन, मुक्त मुक्तलिखित, दीनािनिष्ठा, न्यायधिकारिक, भागवत 
एकदम संक्षेप की टीका, सुमारे की ज्योत्स्ना टीका, रामपञ्च, व्यंग 
प्रकाश, विश्वनाथ प्रकाश, आनंदकाद्वयक, धर्मशास्त्र विश्वनाथलाली, कर्मधर्म 
निर्णय, शांतिपुरोस्तिक, विश्वनाथ चरित, धृतराष्ट्र सतिलक, मंगलशालक, 
परमतत्व, उत्तमकाव्य-प्रकाश, गीतारूपण्डनश्रोत्रक, रामायण, गीता-रघुनंदन 
प्रामाणिक, सर्वसंग्रह, रामचंद्र जू ही कथारी, भजनमाला, तथा आनंद 
रघुनंदन नाटक, आदि है ।

महाराज विश्वनाथ सिंह जी के पुत्र महाराज रघुनाथसिंह भी काव्य 
रचना करते थे । राम-भक्ति में इनकी अनन्य आस्था थी । अनेक 
राम-काव्यकार इनके संपर्क में रहते थे जिनमें लक्ष्मणप्रसाद, संत वरि, 
हनुमान प्रसाद, विश्वशान कौशल, यायाभ, न-दरि, देव, पुष्कर सिंह, 
जगदीश प्रसाद गोलम, गया प्रसाद कायस्थ, गोडवाल प्रसाद अजबेस, 
वीतालम, वासुदेव रक्षक नायण, रामकेश्वर बिहारी, तथा रामचंद्रशाक्ती 
आदि थे । रघुराज सिंह की प्रसुख रचनाओं में सुन्दरशास्त्र, विनयपत्रिका, 
शक्तिमान परिणय, आनन्दमुखिनिधि, भक्तिविलास, रहस्यपंचाध्यायी, 
रामसिकावली, राम स्वायंत, विनय-प्रकाश, रामाद्वयक, रघुपतिशास्त्र, 
धर्म-बिलास, श्रीमद्भागवतमहात्म्य, भागवतमाया, गंगाशास्त्र, शांभुशास्त्र, 
हनुमानचरित्र, परंप्रभोध, सुधरामविलास, रघुराजचन्द्रवली, नरमदास्तक 
आदि है ।

प्रताप कुंवर बाई का राम काव्य परम्परा की एक विशिष्ट प्रदान 
मान जा संक्ता है । प्रतापकुंवर बाई गोयन्द दास रखलीत की पुनी 
थी । इनके पति मारवाई में महाराजा मानसिंह थे । बचपन में ही 
स्वामी पुरुषदास के उपदेश से इनमें राम-भक्ति का उदय हुआ था। 
विधवा होने पर इन्होंने रामचंद्र को ही अपना सर्वस्त समझ लिया। 
इनकी लिखियहुई पुस्तकों में रामचंद्र-महिमा, रामगुणसागर, रघुराज 
लीला, रामसुजज पत्रिका, राम-प्रम सुखसंगार पत्रिका, रघुनाथ जी के 
कवित, भजनपद हर जस, प्रताप विनय, श्रीरामचंद्र विजय, हरजस
गायन आदि हैं ।

प्रताप कुंवर बाई का राम काव्य परम्परा की एक विशिष्ट प्रदान भवन माना जा सकता है । प्रतापकुंवर बाई गोयनद दास रखलास की खुशी थीं । इनके पति मारावड़ में महाराजा मानसिंह का उदय हुआ था । भवन में ही स्वामी पूर्णदास के उपदेश से इन्हें राम-भक्ति का उदय हुआ था । बिचवा होने पर इन्होंने रामचर्या को ही अपना सर्वस्व समझ लिया । इनकी लिखी हुई पुस्तकों में रामचंद्र-महिमा, रामगुप्तसागर, रघुवर स्नेह लीला, रामसूरसस पत्रिका, रघुनाथ जी के कविता, भजनपद हर हज, प्रताप बिनय, श्रीरामचंद्र बिनय, हरजस गायन आदि हैं ।

काशिजीत्हस्वामी ‘देव’ रामकाव्य परम्परा के प्रसिद्ध कवि हैं । काशिजीत्हस्वामी ‘देव’ काशी-नरेश ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह के गुरु थे । इन्होंने अनेक ग्रन्थों में रचना की, जिनमें रामायण परिचय, विनयमृत, पदावली, रामलग, वैरायणदीप, अयोध्या बिन्दु, आशिनीकुमार बिन्दु, गया बिन्दु, जानकी बिन्दु, पंचकोशमहिमा, मथुरा बिन्दु, रामरंग, श्याम रंग, श्यामसुधा, उदासीसंत खोत्र, आदि हैं ।

उमापति त्रिपाठी ‘कोविंद’ भी इसी परम्परा से संलग्न हैं । श्री उमापति त्रिपाठी ‘कोविंद’ सीतापुर के नवासी थे । इनके पिता का नाम शंकरपति त्रिपाठी था । इनके गुरुओं में श्रीकृष्णराम शेष, धनवंतरि भट्ट तथा बैरवत बिन्दू हैं । तैपाल-नरेश सुरेंद्र विक्रमशाह ने इनका समान किया था । लखनऊ में राजा बख्तावर सिंह रिवा में महाराज विस्वनाथ सिंह तथा अयोध्या के राजा दर्शन सिंह ने भी इन्हें समानित किया था । कहा जाता है कि इन्होंने काशी में महादेव मिश्र से ब्रह्मविद्या प्राप्त की थी । इनके लिखे हुए ग्रन्थों में न्यायतंत्रिक श्रीरामचंद्र, विद्वानलंकार, पंचालंकार, बुद्धप्रकाश, भाष्यांतरण, शब्दनुमासाधर, व्याकरणदृष्टिकोष, पूर्वक्षम, बुद्धगुण, गीतगोविन्द, उमापतिशातकेत्र, सुधांशुकीनास्त्र, रूपसृष्टि, रत्नसृष्टि, दोहावली, रत्नावली, हरसरसात, दर्शनशातक;
युगलान्यशरण ‘हेमलता’ का भी इसीप्रमाणे में सीन है। स्वामी
युगलान्यशरण ‘हेमलता’ का जन्म सन 1818 ई। में हुआ था।
वह पठना जिले के निवासी थे। इन्हें कृष्ण नामक गुरु से शिक्षा
प्राप्त की थी। भक्तमालि संत की प्रेमना से यह युगलप्रिया जी के
शिष्य ने थे। इनके लिखे हुए ग्रन्थ एक बड़ी संख्या में उपलब्ध
होते हैं। जिनमें सीताराम स्नेहसागर, रघुर-गुण-दर्पण, मधुर मंजुमाला,
सीताराम नाम-प्राप्त प्रकाश, प्रेमपरवर्त्म दोहावली, विनय-विहार, प्रेमप्रकाश,
नाम प्रेम-प्रवचनी, सत्संग सतसई, भक्तनामावली, प्रेमउंग, सुमतिप्रकाशिका,
हदयहुलासिनी, अष्टाणग्रन्थ, उपदेशनीतिशालि, उजवल-उलकंठा विलास,
मंजुमोदचौरतीसी, वर्ण-विहार, मनबोधशालि, विरतिशालि, वर्णबोध, वीसायंत्र,
पंचदशि यंत्र, चौरतीसा यंत्र, हर्पक्राशा, अनन्यप्रमो, नवल नाम चित्तामणि,
संतचन्दिविलासिका, वर्णउंग, रूपहस्य पदार्थाली, रूपहस्य अनुभव,
संतसुखप्रकाशिका, अवधारावसीपत्तन, रामनामपरवर्त्मदावली, सीतारामउलकंठा
प्रकाशिका, अवध-विहार, सुखसीमा दोहावली, उजवलउपदेश-यंत्रिका,
नाममय एक-खरोक्ष, योगसंहतरंग, युग वर्ण-विलास, प्रबोधदीपिका
दोहावली, विद्यमानित प्रकाशिका, प्रमोददायिका दोहावली, वर्णविहारमोद
चौरतीसी, उदचित्त्रप्रपोतर्ती, अश्वदशरहस्य, जानकी स्नेहहुलास शाक्त,
नामपरवर्त्मदावली, वर्ण-विहार दोहा, सत्तिनायशालि, विरतिशालि,
विशदसुखबोधावली, तत्तवपदेश बारहाशि सातबार, मणिमाल, अर्थपंचि,
मन नसीहत, फासीहुलफतहजीवार झूलना, भक्तविशालिंग अस्ति त्य सूक्ष्म संवाद,
वैस्मोयनिगिनिनय, पंचायुध स्तोत्र, झूलन फारसी हुरफ, झूलन
हिन्दी वर्ण, नैत वर्तीसी, पद्मा यंत्र, अष्टायम कक्हार, अनन्य प्रमोड,
प्रीति प्रमोदिका, नाम विनोद बसावन बरबै, राम नवरत्न, गुष्टिहिमा,
संत चन्दर्वली, पारसमर्ग, विनोद विलास आदि मुख्य हैं। इनके काव्य
का एक उदाहरण इस प्रकार है:

52
ललान कैसे निवृह्गी मोरी तोरी प्रीति ।
जो माखन हि वीच प्रान प्रिय तेहि पथ चलत सभीत ।
महा मलीन मूल मरगह वषु तासन नेह विप्रीत ।
पल भर कहो न मानत तम, मन रचत रीति विप्रीत ।
‘युगल अनन्य शरण’ तापित मन कीजिय पदि सुसीत ॥

रामव्वज्जुभाषण ‘प्रेमविधि’ का इस परम्परा में योगदान रहा है ।
स्वामी युगलान्न्याशण के प्रशिष्य रामव्वज्जुभाषण ‘प्रेमविधि’ का जन्म
सन् 1858 में हुआ था । यह बुन्देलखंड के रहने वाले थे । इनके
पिता रामलाल और माता रामदेवी थीं । इनके घर का नाम धनुषधारी
था । इन्होंने रामव्वज्जुभाषण जी से दीक्षा ली थी । महात्मा नरहरिदास,
मणिराम, विद्यादास तथा व्याणदास के सम्पर्क में भी यह आये थे ।
इनके लिखे हुए ग्रन्थों में ‘वृहत्कोषलखंड की टीका, शिक्षांतिता
की टीका, सख्यस्यिन्युचन्द्रदय की टीका, जानकीस्वराज की टीका,
सुदर्शनसंदर्भ की टीका, रामरसल की टीका, ध्याममंजरी की टीका,
रहस्यज्य की टीका, तत्वज्य की टीका, शिक्षाप्रती की टीका, रामपतल
की टीका, विनयकसुंभाजल की टीका, सुदामा बारह खड़ी की टीका,
रामस्वराज के श्री हरिदास कृत भाष्य की टीका, रमातीपीनी उपनिषद्
के श्री हरिदास कृत भाष्य की टीका मुख्य है ।

बैलनाथ पूर्ववंशी रामकायव परम्परा के अनुयायी थे । श्री बैलनाथ
पूर्ववंशी का जन्म संवत् 1890 में हुआ था । यह बाराबंकी की जिले
के निवासी थे । इनके पिता का नाम हीरानन्द था । इन्होंने अपने
चाचा फकरेराम से दीक्षा ली थी जिनके गुरु महात्मा बैलनाथ थे ।
बैलनाथ जी के ग्रन्थों में मीताली की टीका, काव्यकपिलुम, कविताली
की टीका, रामचरितमानस की टीका, राम सतस्या, भावप्रकाशिका,
रामसिया, संयोगपदकली आदि है ।

जानकी प्रसाद ‘रसिकबिहारी’ ने इस परम्परा की सिद्धि को बढ़ाया
स्वामी जानकी प्रसाद ‘रसिकबिहारी’ का जन्म 1844 में हुआ था ।
वह हिंदी के निवासी थे । उनके पिता का नाम श्रीधर था ।
इनके गुरु महात्मा प्रायेराम थे। इनके लिखे हुए ग्रन्थों में काव्य सुधाकर,
मानस प्रसं, नामपर्चीसी, सुमसि पत्चीसी, आनन्दवेलि, पावस विनोद,
सुयाश करद्व, द्रूतुरंग, नेह सुनरी, रस कौमुदी, विपरीत विलास, इश्क
अजायब, बजरंग बसैसी, बिरह दिवाकर, ग्रन्थ प्रभाकर, कानून स्ताम्प,
कानून जामे अंग्रेज, सतरंग विनोद, नवल चित्र, पटक्कुलु विभाग, राग
ट्रांवली, मोदमुकर, कल्पतरु कवित, दौरांकोरि, रामसार्य, कवित
वर्णविलास आदि है।

बनादास राम काव्यथारा के कवियों में पूरे उत्तर भारत में प्रसिद्ध है। इनका जन्म सन 1821 में हुआ था। वह गोंडा जिले के
निवासी थे। उनके पिता का नाम गुरुदत सिंह था। इन्होंने महात्मा
लमण बन से दीक्षा ली थी। इनकी भेंट परमहंस सिद्धवंशभागण से
भी हुई थी। इनके लिखे हुए ग्रन्थों में अरजपत्रिका, नामनिर्णय, रामपंचाङ्ग,
सुरसरिपंचरत, विवेकमुखावली, रामचटा, गरजपत्री, मोहिनी अश्वक,
अनुरागविवर्णक रामायण, पहाड़ा, मात्रा मुक्तावली, ककहरा अरिश्च, ककहरा
झुलना, ककहरा कुंडलिया, ककहरा चौपाई, खंडन खंड, विशेष विनास,
आत्मबोध, नाममुत्तावली, अनुगर्गलावली, ब्रह्मसंगम, विज्ञानमुक्तावली,
तत्त्वप्रकाश वेदा, सिद्धान्तबोध वेदान्त, शब्दातीत वेदान्त, अनन्व्य स्थानय
वेदान्त, स्थानन्वत वेदान्त, अक्षरातीत वेदान्त, अनुभवान्वत वेदान्त,
वेदान्तपंचांग, ब्रह्मायण शांति सुप्रसिद्ध, ब्रह्मायण परस्मात्मबोध, ब्रह्मायण
पराभूति 'परत', शुद्धरूप वेदान्त ब्रह्मायण, रकारादि सहस्रानाम, मकारादि
सहस्रानाम, बजरंगविजय, उभयप्राप्त रामायण, विस्मय संहार,
सायांबावली, नाम पत्र, नाम पत्र संग्रह, चीज, मुक्तमुक्तावली,
गुस्महाक्ष, संतुमुर्मरी, समस्यावली, समस्या विनोद, झुलनपाचीसी,
शिवसुमिरी, अनुभुत विजय, रोग-पराजय, गजन्त्र पंचदशी, प्रह्लाद
पंचदशी, दीपदी पंचदशी, दाम दुलाई, अर्ज पत्री आदि के नाम उल्लेख
नीय है।

पर्वतीय क्षेत्रों पर भी रामकाव्य धारा प्रसिद्ध हुई। शीलमणि
उसके मुख्य हैं। स्वामी शीलमणि जी का जन्म सन 1877 में
हुआ था । वह कुमारूं क्षेत्र के निवासी थे । उनके पिता का सुधीरपंत
और माता का सुभद्रा देवी नाम था । इनके परे का नाम हरस्वंत
था । पवारीजी से इन्होंने दीक्षा ली थी जिन्होंने इनका नाम सीतारामदास
रखा था । रामानन्द दास से भी इन्होंने उपदेश ग्रहण किया था ।
इनके ग्रन्थों में कन्दकभवन महात्म्य, सम्बन्ध प्रकाश, श्रीअवध प्रकाश,
पदावली-संग्रह, पावस-वर्णन, पंचीकरण, विनयपत्रिका, रसमेल दोहावली,
रत्नमंजरी रामकर मुद्रिका, सख्यरस दोहा, सख्यरस दर्पण, सियावनम
मणिमाला, केदारकल्प वैदिक, कवितावली, होरी, जान भूमिका, सियाकर
मुद्रिका, विषेश गुच्छा आदि का नाम उल्लेख किया जाता है ।

सर्यूदास का नाम राम काव्य धारा में बड़े आदर के साथ लिया
जाता है । महात्म्य श्रीतलमण के शिष्य सर्यूदास "सुधामुखी" थे ।
इन्हें लिखे हुए ग्रन्थों में ‘पदावली, सर्वसारोपदेश, रसिकबुझुप्रकाश तथा
भक्तिनामावली है ।

सीतारामशरण ‘रामसंसर्गमणि’ का स्थान इस दिशा में प्रसिद्ध
है । स्वामी सीतारामशरण ‘रामसंसर्गमणि’ का जन्म संवत् 1916 में
हुआ था । इनके पिता का नाम अवधिकृषोर प्रसाद और माता का
नाम जगरामी देवी था । इन्होंने कामदेवनामणि जी से दीक्षा ग्रहण की
थी । इनके लिखे हुए ग्रन्थों में ‘श्रीरामस्तिराज ठीका, श्रीसीताराम
मानसीसेवा, श्री हुमित यशा-तंगिणी, सर्यूदरंग तहरी, श्रीसीताराम नवशिख
गीता बारहवां अध्याय भाषा ठीका, श्री रामप्रेम परिचय, श्री रामायण
बारहखड़ी, श्रीरामज्ञाकी विलास, श्रीरामशत वंदना, ध्यानमंजरी ठीका,
श्री रामानन्द यशवल्ली, श्री सुगलजन बधाई, बारहमासा महात्म्य,
श्रीरामलीलासंवाद, श्री सीताराम प्रेमपदावली, श्री सीताराम शोभावली,
श्रीसीताराम दुलाबिलास, श्रीसीताराम सुख विलास, श्री जानकी यशवल्ली,
श्रीरामज्ञानकी विलास, भाषा रामरक्षा स्तोत्र, श्री सीताराम नाममंजरी,
श्री नामा जीकृत भक्तमाल की ठीका आदि प्रमुख है ।

सियालालरण ‘प्रेमलता’ का सीन रामकाव्यधारा में महत्वपूर्ण है
। स्वामी सियाललरण ‘प्रेमलता’ का जन्म संतो 1871 में हुआ था
यह म्हालियर के निवासी थे। इनके पिता भीजीराम थे। इनका पर नाम बालाराम था। इन्होंने बलदेवदास नामक संत से भक्ति की प्रेरणा ग्रहण की थी। इनके लिखे हुए ग्रन्थों में ढूँढ़ उपसना रहस्य, प्रेमलता पदावली, वैतन्य-चालीसा, सीताराम रहस्य दर्पण, नाम-रहस्यजयी, नामतव-सिद्धान्त, जानकी स्तुति, षड्यंत्र विमल विहार, सीताराम नामसंपर्कन, सीताराम नाम जापक महात्म्य, ज्ञान पत्रास, मिथिया विभूति प्रकाशिका, वैराग्य प्रवोधक बहतरी, हितोपदेश शतक, प्रेमलता बाराबंधी, नाम सम्बन्ध बहतरी, नाम वैभव-प्रकाश चालीसा, जानकी विनय नामादि, नाम हस्तावली, सतगुरु पदार्थ-प्रवोधिका, संत प्रसादी महात्म्य, अनन्य शतक, निजामबोध दर्पण, अपेल सिद्धान्त, षोड़श भक्ति, सत्तमनिमा, उपदेश पेटिका, पंचसंस्कार, अष्ठाम, जानकी बघाई, सारसंद्वाल प्रकाश, नित्याधर्मना, विश्वविद्यालय सीमिता आदि है।

अन्य कविता-

भक्तिसुगीत राम-काव्य की परम्परा के अन्तर्गत उपयुक्त कवियों के अतिरिक्त अन्य वी अनेक कवियों ने योगदान दिया है। इन्हें रामदास तपसीजी का नाम भी उल्लेखनीय है जिनके पिता पं. हरिनारायण थे और जिन्होंने महात्मा संतदास से दीक्षा ली थी। स्वामी मन्नाजी भी इस परम्परा में हुए हैं जिन्होंने रामकथा से सम्बन्धित सकृत काव्य की रचना की है। प्रसिद्ध संत जीवाराम के पिता और गुरु महात्मा शंकरदास भी। इस परम्परा में उदयित किये जा सकते हैं। महात्मा मणिराम ने भी राम-कथा पर आधारित सकृत काव्य की रचना की है। स्वामी लक्ष्मीनारायण दास पीरारी ने भी इस काव्यप्रवृत्ति के विकास में योग दिया। इनके पिता शिवाराम पांडे थे। इन्होंने महात्मा अवध प्रसाद से दीक्षा ली थी। 'श्रीभक्ति प्रकाशिका शीर्षक ग्रन्थ' की भी इन्होंने रचना की थी। महात्मा मणिराम के शिष्य स्वामी पतितदास ने भी 'गुप्तगीता', 'पतितदावली' और भजनसंग्रह आदि कृतियों की रचना की। पं. रामस्वरूप के पुत्र महात्मा रामशारण ने
रामदत जी से शिक्षा प्राप्त की थी। इनके दीक्षा गुरु महात्मा गरीबदास जी थे। इनके लिए हुए ‘रामतलेन्द्रियां अन्त’ संग्रह’ तथा मैथली रस्स्यपादवली नाम ग्रन्थों का उद्देश्य मिलता है। श्री दुर्गादत्त के पुत्र बाबा रघुनाथदास ने हरिनाम सुमिरती नामक एक कृति की रचना की थी। हुमायुनशाह श्रीमान्नाम ‘मधुराङ्गली’ ने भी इस काव्य-पथमर में योग देते हुए युगल-विनोद पदावली, युगल-बसंत विहार लीला, युगल-हिंदोल लीला, युगलविनोद कवितावली तत्त्वा रामदत्तावली, आदि कृतियों की रचना की। विश्वामिरार नामक ग्रन्थ के लेखक रघुनाथदास रामपनेही थे जिनके गुरु देवदासजी थे। इनके प्रियाहलिया श्रीमान्नाम नामक एक ग्रन्थ की रचना की थी। पं. ईश्वरदत्त के विभाषिय रसेशंदत इस परमर में जानकीवर शरण ‘प्रतितिलिता’ के नाम से विख्यात थे। इन्होंने मिलिमालभाष्य नामक एक ग्रन्थ की रचना की थी। परमहंस सीतासरण के पिता का नाम सुखदेव त्रिपाठी और माता का गौरादेवी था।

इनका घर का नाम कामदानाथ था। इन्होंने शीलमणि जी से दीक्षा ली थी। पं. सीताप्रसाद भी इन्हीं के गुरु-भाई थे जिनके पिता का नाम ध्यानन्द तथा माता का सपूर्वेदेवी था। इन्होंने काव्य मधुकर दूत, चिन्ता चिन्तामणि, आनंदधर्म, भ्रातु पंचक, सीताशक, वजीर विजय, कलिका स्तुति, अरुणराज, प्रसन्वली, इत्य विनोद आदि ग्रन्थों की रचना की थी। महाराणी वृद्धानु कुंवरी रामप्रिया का नाम भी इसी परमर में उद्भूत था जिन्होंने राम कथा से सम्बन्धित स्तुत काव्य की रचना की थी। स्वामी रामविलास्भास्य श्री हिन्दी गणेशदत्त दीक्षित के पुत्र थे। इनका घर का नाम बलदेव था। पं. भगवान्दीन से इन्होंने काव्य-शिक्षा ग्रहण की थी। इन्होंने युगल-विनोद पदावली शीर्षक एक ग्रन्थ की रचना की थी। स्वामी कामदेवन्तर्कणि ने सीतायाम भरे। विकालिकादिव्य तथा श्रीपाष्पभवन्त्रहस्य रतनकर नामक ग्रन्थों की रचना की थी। श्री सीताराम शरण भ्रगवान प्रसाद ‘सप्तक‘ ने इस परमर में तनमग की स्वर्णिया उद्दीपन रीढ़स, शरीर पालन, हिंदू से हिंदू की उद्दीपन तद्वीर, आदि कृतियों की रचना की। श्रीगोमतीदास महादुर्लिता ने कुटकर पदों की ही रचना की थी। विश्वास मधुकरिया
प्रेमज्ञ द्वारा रचित ग्रन्थ में ज्यादातर रूप में उपलब्ध होता है। तथा ज्ञात रामचरित में नामित ज्ञात ग्रन्थ का रचना की थी। तथा स्वामी वामनजी ने स्कुट काव्य रचा था। तथा स्वामी कथा से सम्बन्धित स्कुट पदों की रचना की थी। तथा स्वामी कथा से सम्बन्धित स्कुट पदों की रचना की थी। तथा स्वामी कथा से सम्बन्धित स्कुट पदों की रचना की थी। तथा स्वामी कथा से सम्बन्धित स्कुट पदों की रचना की थी। तथा स्वामी कथा से सम्बन्धित स्कुट पदों की रचना की थी।
वृत्प्रकाश, रघुराज धनाक्षरी, रामगीतमाला के रचिता क्रियाचक्रण मिश्र, रामचरित मानस की दीक्षा, के रचिता हरिचरितदास, रामचरित मानस के रचिता परमेश्वर गिरि, राम-रावणयुद्ध के रचिता मूर्ति, कवितावली के रचिता परमेश्वर गिरि, वाल्मीकि-रामायण, श्लोकार्थ्य प्रकाश, तथा हनुमत पवित्र, के रचिता गंगेश बालकांड रामायण, के रचिता वेदविद्यादास कायस्त्थ, रामजूनीदेव के रचिता धनीराम, हनुमत बालचर्च। के रचिता रुप, सुभिंद्रा भूमित्त तथा वीरचरण के रचिता श्रीनाथरसिद्ध, सीताराम रुपवर के रचिता गोकुलनाथ, प्रेमप्राणी के रचिता जानकी चरण, रामायण श्रंगार के रचिता शिवबहुशायर, अष्ट्राय के रचिता रामगोपाल, रामचरित का नक्षिक्ष के रचिता रूपास्वाय, रामायण के रचिता सीता राम, रामचरित विलास, आरावे रामायण, अध्यात्म रामायण, रामचरित विलास, आरावे रामायण, अध्यात्म रामायण; श्रीक प्राचीन, सीतासब्ज, गंगेश विंद्र, रामायण सुमित्रा, तथा मित्रिता वंद के रचिता नवसिंह कायस्त्थ, रामायण, रामकांडार्थ के रचिता भगवद्वरास रामनीज जानकी पवित्र के रचिता रामायण, अद्वृत्त रामायण, रामकथामूर्त, बाल्मीकि रामायण, तथा श्रीरामस्त्रोत्र, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के रचिता निर्घोरदास, रामायणसूचिक, के ।
तथा रामरत्नावली के रचिता हरिबक्ष्णा सिंह, रामरत्नावली के रचिता लक्ष्मण, राममन रहस्य, जानकी जी की मंगलवाचरण के रचिता श्री निवास, रामनरतन विजय के रचिता जानकीप्रसाद (प्रथम), रामायण महात्म्य तथा रामगीता के रचिता गोपालदास, रसिक विनोद के रचिता दयानिधि, रामरत्नाकार, रामलीला प्रकाश, हनुमत, भूषण, तुलसी भूषण तथा मानस भूषण के रचिता सरदार कवि, बालमीक रामायण भाषा के रचिता छजदासी, रामायण तथा रामबिलास के रचिता ईश्वरी प्रसाद, रामायण के रचिता गोमतीदास, भक्तिविलास, मसल विवेक मानस की शीलावृत्त ठीका, के रचिता बाबा हरिदास, रसिक प्रकाश भक्तमाल की सुबोधिनी ठीका, के रचिता बासुदेवदास, रामजन के रचिता सूजदास, रामचन्द्र रामदेव राम अद्वैत रामायण भाषा के रचिता गोकुलप्रसाद, ब्रज, भक्तिरामसिद्धान्त के रचिता रामचन्द्रभक्ती, रामायण तत्त्वभोजनी के रचिता रामदयाल, रामभक्ति प्रकाशिका के रचिता जानकीप्रसाद (द्वितीय), महारामायण के रचिता भगवानदास खत्री, भक्तमन रंजनी के रचिता प्रमसखी (द्वितीय), हनुमान पैज के रचिता लालकवि, रामायण रामानुगामली के रचिता जैदीहशरण, पदावली के रचिता श्यामसखे, वाणी, सिद्धांत बिजार तथा भक्तनामावली के रचिता धूमदास, मानस शंकावली के रचिता बन्दन पाठक, अवध विलास रामायण के रचिता इन्द्रजीत, अद्वैत रामायण के रचिता लालमण, गीतारामायण के रचिता महाबीदिदास, भक्तिविलास, महात्म्य के रचिता चुतुदास, रामचन्द्रनबिलास के रचिता राजवदास, सीतारामविहार संग्रह के रचिता श्याममाथ, प्रेमप्रकाश के रचिता गीतिकार, विजय प्रव खंड के रचिता बंदीदीन दीक्षित, सातों कांड रामायण के रचिता समर सिंह, रामस्य रामायण के रचिता पूर्णपूर्ण, रामलीला के रचिता शिवप्रकाश सिंह, रामायण कवि के रचिता शंकर त्रिपाठी, राम नबिलास के रचिता मुनिलाल, माधवपुर रामायण के रचिता माधव कथक, बाल्मीक रामायण भाषा के रचिता महेश दत्त, सम्बन्धत्त्व भाषकर के रचिता शीतलाम प्रबोधचार, रहस्य तत्व भाषकर के रचिता पदमाभचार, संक्षिप्त उपासना क्रंड के रचिता मानदमण, रामचन्द्र की बारामासी
के रचिता छेदालाल, पशुराम संवाद के रचिता काशीराम, रघुनाथं शतक के रचिता मुन्तालाल, जानकी रामचरित नाटक के रचिता हरीराम, रामचरित दोहाली के रचिता युगलप्रसाद चौबे, सियालाल समय, रस वर्धनी तथा कवितादास के रचिता अली सियारसिक, युगल सनेह विनोद तथा प्रेमचन्द्रिका के रचिता रसिक वल्लभ शरण, रामजन्म के रचिता स्वयंप्रकाश, रामसुतु, विज्ञप्तिक, भक्त-विज्ञप्तिक तथा रामपंचाशिका के रचिता गुमानी पंत, सरजू अश्वक के रचिता रामकिशोर दास, अवध विलास के रचिता विष्णुप्रसाद कुंबर और रामप्रिया विलास के रचिता रामप्रिया हैं।